www.bharatsamvad.in

R.N.I.No- UPHIN/2009/30939

सत्य का स्वर

भारत संवाद

प्रयागराज, लखनऊ तथा मुम्बई से एक साथ प्रकाशित

ऐप में पढ़े
E-PAPER
भारत संवाद
Scan for E-Paper or Search on Play store Bharat Samvad E-Paper

मौसम

अधिकतम तापमान 40.c

30.c न्यूनतम तापमान

बाजार

सोना 98.700g

चांदी 106.000 kg

2 आखिर अहमदाबाद में क्या गलत हुआ, सही जांच एवं साक्ष्यों से सामने आएगा सच

लॉस एंजिलिस-हिंसा के बीच वाशिंगटन में मिलिट्री परेड की तैयारी 06

वर्ष :17 | अंक :74 | प्रयागराज ,रविवार , 15 जून , 2025 | पृष्ठ : 06 | मूल्य : 1: 00 रुपए

एयर इंडिया विमान का एटीसी से संपर्क टूटा, पायलट का आखिरी संदेश था 'मेडे'

275 पहुंची मृतकों की संख्या; 248 डीएनए सैंपल्स लिए गए, 11 शवों की पहचान

प्रेस कॉन्फ्रेंस

नागरिक उड्डयन मंत्रालय अहमदाबाद एयर इंडिया विमान दुर्घटना के बारे में मीडिया को जानकारी दे रहा है जिसमें 270 लोगों की जान चली गई। नागरिक उड्डयन मंत्री राम मोहन नायडू ने अपने संबोधन की शुरूआत जान गंवाने वालों के प्रति संवेदना जताते हुए की और दुर्घटना को त्रासदी बताया।

एजेंसी

नयी दिल्ली। नागरिक उड्डयन मंत्रालय अहमदाबाद एयर इंडिया विमान दुर्घटना के बारे में मीडिया को जानकारी दे रहा है जिसमें 270 लोगों की जान चली गई। नागरिक उड्डयन मंत्री राम मोहन नायडू ने अपने संबोधन की शुरूआत जान गंवाने वालों के प्रति संवेदना जताते हुए की और दुर्घटना को त्रासदी बताया नागरिक उड्डयन मंत्रालय के सचिव समीर कुमार सिन्हा कहते हैं, 12 जून को दोपहर करीब 2 बजे हमें सूचना मिली कि अहमदाबाद से गैटविक लंदन जा रहा विमान दुर्घटनाग्रस्त हो गया है। हमें तुरंत एटीसी अहमदाबाद के माध्यम से इस बारे में विस्तृत जानकारी मिली। यह एआईसी 171 था और इसमें कुल 242 लोग सवार थे, जिसमें 230 यात्री, 2 पायलट और 10 चालक दल के सदस्य शामिल थे। उन्होंने कहा कि इस विमान ने दोपहर 1:39 बजे उड़ान भरी और कुछ ही सेकंड में करीब 650 फीट की ऊंचाई पर पहुंचने के बाद यह डूबने लगा, यानी इसकी ऊंचाई कम होने लगी।

टाटा के बाद एयर इंडिया का बड़ा ऐलान

विमान हादसे के पीड़ितों को मिलेगी 25 लाख रुपये की राशि

यह अंतरिम सहायता टाटा संस द्वारा पहले से ही दिए गए 1 करोड़ रुपये की वित्तीय सहायता के अतिरिक्त है। एयर इंडिया में हम इस त्रासदी से बेहद दुखी हैं। हम पीड़ित परिवारों, प्रियजनों और प्रभावित सभी लोगों के प्रति संवेदना व्यक्त करते हैं। हम उनके दुख को साझा करते हैं और हर संभव तरीके से उनके साथ खड़े हैं। एयर इंडिया ने हाल ही में हुए दुखद हादसे में अपनी जान गंवाने वाले लोगों के परिवारों के प्रति गहरी संवेदना और एकजुटता व्यक्त की है। एयरलाइन ने कहा कि इस बेहद कठिन समय में प्रभावित परिवारों की देखभाल और सहायता करने के लिए इसकी ग्राउंड टीमें अथक प्रयास कर रही हैं।

नेता गलत बयानबाजी नहीं करें : अमित शाह

पचमढ़ी में भाजपा सांसद-विधायकों को नसीहत दी, एक बार गलती हो जाए तो दोबारा न हो

सांसद जनार्दन मिश्रा बोले- प्रशिक्षण वर्ग एक मंत्र

रीवा सांसद जनार्दन मिश्रा ने कहा प्रशिक्षण वर्ग से जनप्रतिनिधियों में, कार्यकर्ताओं में गुणात्मक परिवर्तन होता है। इससे पार्टी की रीत,नीत, चाल, चरित्र और चेहरे काफी सुधार होने की गुंजाइश रहती है। ये एक मंत्र है प्रशिक्षण वर्ग। जिस प्रकार रोज मंत्र का जाप किया जाता है। ठीक वैसे ही भाजपा कार्यकर्ताओं को जागृत करने के लिए प्रशिक्षण वर्ग आयोजित करती रहती है।

एजेंसी

पचमढ़ी ,केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने शनिवार को एमपी के सांसद-विधायकों को गलत बयानबाजी न करने की नसीहत दी। उन्होंने कहा- एक बार गलती हो जाती है, लेकिन दोबारा न हो। शाह ने ये बातें पचमढ़ी में आयोजित भाजपा सांसद-विधायकों के प्रशिक्षण वर्ग में कही। तीन दिन तक चलने वाले इस कार्यक्रम में मध्यप्रदेश सरकार के सभी मंत्री-विधायक, लोकसभा-राज्यसभा सांसद शामिल हो रहे हैं। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव पूरे तीन दिन कार्यक्रम में मौजूद रहे। कार्यक्रम में केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान भी मौजूद रहे। प्रशिक्षण वर्ग में संबोधन के बाद शाह भोपाल के लिए रवाना हो गए हैं। सांसदों-विधायकों ने किया

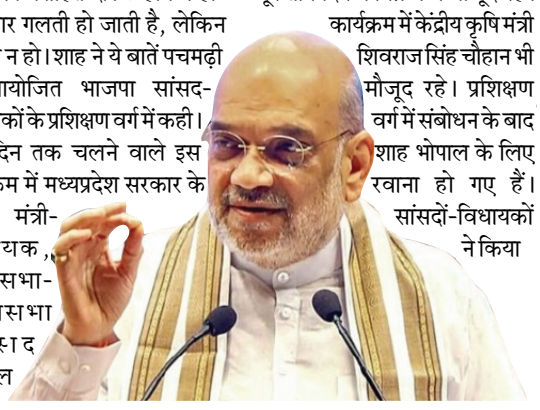

हर उड़ान से पहले बोइंग 787 की जांच जरूरी, इंजन कंट्रोल और टेक ऑफ का रिव्यू होगा

यह दुर्घटना, जो उड़ान भरने के तुरंत बाद हुई, में विमान सरदार वल्लभभाई पटेल अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे के पास डॉक्टरों के आवास वाली एक आवासीय इमारत से जा टकराया। यह 2011 में इस मॉडल के वाणिज्यिक सेवा में आने के बाद से बोइंग 787 से जुड़ी पहली घातक दुर्घटना है।

एजेंसी

नई दिल्ली: एयर इंडिया ने भारत के विमानन नियामक, नागरिक उड्डयन महानिदेशालय के आदेशों के बाद अपने बोइंग 787 ड्रीमलाइनर बेड़े के अनिवार्य सुरक्षा निरीक्षण शुरू करने के साथ ही लंबी दूरी के मार्गों पर संभावित देरी की घोषणा की है। यह कदम अहमदाबाद से लंदन जा रहे एयर इंडिया 787 विमान के भयावह दुर्घटना के मद्देनजर उठाया गया है, जिसके परिणामस्वरूप कम से कम 265 लोगों की मौत हो गई। यह दुर्घटना, जो उड़ान भरने के तुरंत बाद हुई। में विमान सरदार वल्लभभाई पटेल अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे के पास डॉक्टरों के आवास वाली एक आवासीय इमारत से जा टकराया। यह 2011 में इस मॉडल के वाणिज्यिक सेवा में आने के बाद से बोइंग 787 से जुड़ी पहली घातक दुर्घटना है। नौ विमानों को मंजूरी दी गई, 24 और विमानों की जांच की जा रही है शनिवार तक, एयर इंडिया ने पुष्टि की है कि उसने नौ ड्रीमलाइनर विमानों पर आवश्यक एक बार की सुरक्षा जांच पूरी कर ली है और शेष 24 विमानों की जांच नियामक द्वारा प्रदान की गई समयसीमा के भीतरह्न पूरी करने के लिए ट्रैक पर है। ये निरीक्षण विमानों के भारत लौटने पर किए जा रहे हैं, जिनमें से प्रत्येक को अगले परिचालन के लिए मंजूरी दिए जाने से पहले पूरी समीक्षा से गुजरना होगा।

नीट यूजी 2025 रिजल्ट जारी: टॉप 10 में दिल्ली के तीन स्टूडेंट शामिल, राजधानी के टॉपर बने मृणाल किशोर झा

एजेंसी

नई दिल्ली: नेशनल टेस्टिंग एजेंसी ने नीट यूजी 2025 का रिजल्ट आधिकारिक रूप से घोषित कर दिया है. नीट यूजी 2025 की परीक्षा में राजधानी दिल्ली के तीन स्टूडेंट ने टॉप टेन में जगह बनाई है. इसके साथ ही टॉप 100 में 17 स्टूडेंट शामिल हैं. अगर दिल्ली के टॉपर की बात करें तो ऑल इंडिया रैंक में चौथे नंबर पर आने वाले मृणाल किशोर झा दिल्ली के टॉपर हैं. टॉप 10 में जगह बनाने वाले तीन स्टूडेंट में मृणाल किशोर झा को चौथी रैंक, अविका अग्रवाल को पांचवी रैंक और हर्ष केड़ावत को नौवीं रैंक मिली है. इनमें मृणाल के 99.99, अविका के 99.99 और हर्ष केड़ावत के 99.99 परसेंटाइल हैं. तीनों ही लोग जनरल केटेगरी से आते हैं.

ओडिशा के सुंदरगढ़ में नक्सल रोधी अभियान के दौरान आईईडी विस्फोट में सीआरपीएफ अधिकारी की मौत

एजेंसी

ओडिशा के सुंदरगढ़ जिले में शनिवार सुबह नक्सल रोधी अभियान के दौरान आईईडी विस्फोट में केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) के एक सहायक उपनिरीक्षक (एएसआई) की मौत हो गई। अधिकारियों ने यह जानकारी दी। अधिकारियों के अनुसार, सीआरपीएफ की 134वीं बटालियन के एएसआई सत्यबान कुमार सिंह (34) को विस्फोट में बाएं पैर में गंभीर चोटें आईं। उन्हें तत्काल राउरकेला के एक अस्पताल ले जाया गया, जहां इलाज के दौरान उन्होंने दम तोड़ दिया। विस्फोट में जान गंवाने वाले एएसआई उत्तर प्रदेश के कुशीनगर जिले के निवासी थे। यह विस्फोट राउरकेला के निकट बलंग गांव के पास सुबह करीब छह बजे तब हुआ, जब सीआरपीएफ और ओडिशा पुलिस के विशेष अभियान दल (एसओजी) की एक संयुक्त टीम इलाके में तलाश अभियान चला रही थी।

सम्पादकीय

एक नया संकट, इजरायल ने कर ही दिया ईरान पर हमला

इजरायल ने ऑपरेशन राइजिंग लायन के तहत ईरान के परमाणु ठिकानों पर हमला किया क्योंकि ईरान इजरायल के अस्तित्व को चुनौती दे रहा था।ईरान कई बार इजरायल को दुनिया के नक्शे से मिटाने की धमकी दे चुका है। अमेरिका भी ईरान को गैर जिम्मेदार बताकर इजरायल का साथ दे रहा है।अंततः इजरायल ईरान पर हमला करके ही माना। उसने आपरेशन राइजिंग लायन के तहत ईरान के परमाणु एवं सैन्य ठिकानों पर पूरी तैयारी के साथ इतना जोरदार हमला बोला कि वह तत्काल जवाब देने की स्थिति में नहीं रहा।इजरायल ने इस आधार पर ईरान को निशाने पर लिया कि वह उसके अस्तित्व को खुली चुनौती देता है और यदि उसने परमाणु हथियार हासिल कर लिए तो उसके लिए गंभीर खतरा पैदा हो जाएगा।इस आशंका को निराधार नहीं कह सकते।ईरान कई बार कह चुका है कि वह दुनिया के नक्शे से इजरायल का नामोनिशान मिटा देगा। वह परमाणु हथियार बनाने की जिद भी कर रहा है, लेकिन उसकी समस्या यह है कि उसका खुलकर साथ देने वाला कोई नहीं।इस्लामी देश इजरायली हमले की निंदा भले कर रहे हों, पर यह कहना कठिन है कि वे और विशेष रूप से सुन्नी अरब राष्ट्र ईरान को निशाना बनाए जाने से दुखी हैं।वस्तुतः इजरायल और अमेरिका की तरह वे भी नहीं चाहते कि ईरान परमाणु हथियारों से लैस होकर इस्लामी जगत में अपना दबदबा बढ़ाए। कई इस्लामी देश इजरायल के लिए मुसीबत बने हिजबुल्ला, हमास के साथ-साथ यमन के हाउती लड़ाकों को ईरान के खुले समर्थन से प्रसन्न नहीं।सऊदी अरब तो पक्के तौर पर नहीं, क्योंकि यमन के एक बड़े हिस्से पर काबिज हाउती उसके लिए सिरदर्द बने हुए हैं।हाउती इजरायल के साथ-साथ समुद्री सुरक्षा के लिए भी खतरा पैदा करते रहते हैं।ईरान पश्चिम एशिया में अन्य हथियारबंद इस्लामिक गुटों को भी समर्थन देता है। यही काम कतर भी करता है, पर वह अमेरिका का साथी है।ईरान में इजरायली हमले पर अमेरिका भले ही यह जता रहा हो कि वह इससे चिंतित है, पर सच यही है कि राष्ट्रपति ट्रंप वही चाह रहे थे, जो इजरायल ने किया। वह इसे छिपा भी नहीं रहे। विश्व को युद्ध से मुक्त करने की उनकी बातें दिखावा मात्र हैं।बड़ी-बड़ी बातें करने के बाद भी वह यूक्रेन-रूस युद्ध रोकने में नाकाम हैं।वह ईरान को गैर जिम्मेदार और आतंकी गुटों का साथी बताकर इजरायल का तो साथ दे रहे हैं, लेकिन हद दर्जे के गैर जिम्मेदार, चीन की मदद से परमाणु हथियार हासिल करने और आतंकी संगठनों को पालने-पोसने वाले पाकिस्तान को पुचकारने में लगे हुए हैं।साफ है कि भारत दोहरी नीति पर चल रहे ट्रंप पर भरोसा नहीं कर सकता।इजरायल-ईरान युद्ध ने विश्व शांति के साथ-साथ पश्चिम एशिया और भारत के लिए भी संकट बढ़ा दिया है।

आज का विचार

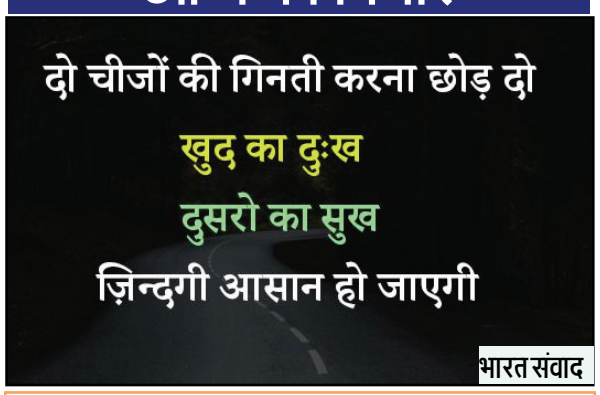

राशिफल

मेष राशि: मेष वालों का दिन आज बहुत महत्वपूर्ण रहने वाला है इसलिए बेकार की बातों पर ध्यान ना दें. नौकरी पेशा जातकों का काम पर पूरा ध्यान देना आवश्यक होगा. व्यापारियों को योजनाओं से अच्छे परिणाम की प्राप्ति होगी और आपकी आय में वृद्धि होगी.

वृषभ राशि: वृषभ राशि वालों का दिन आज अच्छा रहेगा और अपने भीतर सकारात्मकता महसूस करेंगे. आपमें आकर्षण रहेगा, जो परिवार के सदस्यों को बात सुनने के लिए विवश करेगा. कार्यक्षेत्र में आपकी स्थिति मजबूत होगी। आमदनी अच्छी होगी और खर्चे भी हल्के रहेंगे लेकिन आवश्यक कार्यों पर अधिक खर्च हो सकता है.

मिथुन राशि: मिथुन राशि वालों का दिन आज अच्छा रहने वाला है और आप काम पर अच्छे से ध्यान देंगे तो आपके प्रयास रंग लाएंगे. कार्यक्षेत्र में मेहनत सफल होगी और आपके पास धन का आगमन होगा. पारिवारिक वातावरण अच्छा रहेगा लेकिन वैवाहिक जीवन में किसी वजह से तनाव बढ़ सकता है.

कर्क राशि: कर्क राशि वालों का दिन आज अच्छा रहने वाला है क्योंकि आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा. पुराने समय से चली आ रही परेशानियों से किसी अधिकारी की मदद से मुक्ति मिलेगी. कार्यक्षेत्र में कड़ी मेहनत और आत्मविश्वास बहुत कुछ कहेगा. कार्यों में सफलता मिलेगी और बॉस भी आपकी तारीफ करेंगे.

सिंह राशि : सिंह राशि वालों का दिन आज कई मायनों में अच्छा रहने वाला है. काफी दिनों से चली आ रही पुरानी समस्याओं से मुक्ति मिलेगी। साथ ही कोर्ट कचहरी के मामलों पर अधिक ध्यान देंगे.

कन्या राशि: कन्या राशि वालों का दिन आज अनुकूल रहेगा. जीवनसाथी के साथ आपके संबंध मधुर रहेंगे और उनके साथ मिलकर भविष्य की कुछ बड़ी योजनाओं पर काम करेंगे. लव लाइफ वालों को कुछ निराशा का सामना करना पड़ सकता है. कार्यक्षेत्र में आपकी तेज बुद्धि और समझदारी बहुत काम आएगी.

तुला राशि: गणेशजी कहते हैं कि आज का दिन भागदौड़ भरा रहेगा. आप पर काम का बोझ भी कुछ अधिक रहेगा इसलिए स्वास्थ्य का पूरा ध्यान रखें अन्यथा बीमार पड़ने के योग बनेंगे. वैवाहिक जीवन में कड़ा रवैया अपनाना ठीक नहीं है.

वृश्चिक राशि: वृश्चिक राशि वालों का दिन आज मध्यम फलदायी रहने वाला है है. बेवजह की बातों छोड़कर अपने काम पर ध्यान देंगे तो फायदे में रहेंगे. लव लाइफ वालों के लिए अच्छा समय रहेगा. सिंगल जातक किसी खास व्यक्ति को कविता लिखकर प्रपोज कर सकते हैं और उन्हें खुश रखने की कोशिश करेंगे.

धनु राशि: धनु राशि वाले आज कुछ पुरानी यादें ताजा करेंगे. किसी पुराने मित्रों से बात होगी और मन प्रसन्न रहेगा। पारिवारिक वातावरण अच्छा रहेगा. प्रफेशनल और पर्सनल लाइफ में किसी का ज्यादा बातूनी रवैया आपको परेशान कर सकता है.

मकर राशि: मकर राशि वालों के लिए आज का दिन अनुकूल रहेगा और स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा. कुछ अटके हुए कार्य बन जाने से आपका आत्मविश्वास अच्छा रहेगा। परिवार और काम के बीच संतुलन बनाकर रखेंगे तो सब ठीक हो जाएगा. कारोबार तेज गति से आगे बढ़ेगा और आपको आपकी मेहनत का फल मिलेगा.

कुंभ राशि : कुंभ राशि वालों का दिन आज अच्छा रहेगा. धन आगमन का योग बनेगा, जिससे आर्थिक समस्याएं समाप्त हो जाएंगी. मित्रों के साथ कहीं बाहर जाने से आपका मन प्रसन्न रहेगा.

मीन राशि: मीन राशि वाले आज कुछ नया करना चाहेंगे. कामकाज को लेकर आपके इरादे सुबह से ही मजबूत रहेंगे और अपने आसपास के लोगों की मदद के लिए तैयार रहेंगे. नौकरी पेशा जातकों की स्थिति आज ठीक रहेगी. व्यापारियों को व्यापार में लाभ मिलेगा. आमदनी अच्छी होने से मन प्रसन्न रहेगा.

ज्योतिष सेवा केन्द्र
ज्योतिषाचार्य पंडित अतुल शास्त्री

आखिर अहमदाबाद में क्या गलत हुआ, सही जांच एवं साक्ष्यों से सामने आएगा सच

> अहमदाबाद से लंदन जा रही एअर इंडिया की उड़ान एआइ 171 उड़ान भरने के कुछ ही क्षणों में दुर्घटनाग्रस्त हो गई जिसमें 242 यात्री थे। इस हादसे में कई लोगों की जान चली गई। मृतकों में भारतीय ब्रिटिश पुर्तगाली और कनाडाई नागरिक शामिल हैं जिससे जांच का दायरा बढ़ गया है।

पा अहमदाबाद से लंदन जा रही एअर इंडिया की उड़ान एआइ 171 टेक आफ होने के चंद सेकंडों में ही धराशायी हो गई।विमान में यात्रियों और चालक दल को मिलाकर कुल 242 लोग सवार थे, जिनमें से केवल एक ही यात्री बच सका।विमान के रिहायशी इलाके में गिरने के कारण कई और लोग उसकी चपेट में आ गए।हाल के समय में यह सबसे खतरनाक विमान हादसा है।चूंकि मरने वालों में भारत के अलावा, ब्रिटिश, पुर्तगाली और कनाडाई नागरिक भी शामिल हैं, इसलिए जांच-पड़ताल का दायरा व्यापक होने वाला है।यूनाइटेड किंगडम सिविल एविएशन अथारिटी, फेडरल एविएशन एडमिनिस्ट्रेशन, यूरोपियन एविएशन सेफ्टी एजेंसी, ट्रांसपोर्ट कनाडा और नेशनल ट्रांसपोर्टेशन सेफ्टी बोर्ड यानी एनटीएसबी जैसी एजेंसियां इस हादसे की जांच में सक्रिय दिखेंगी।विमान निर्माता बोइंग, डीजीसीए और एविएशन इन्वेस्टिगेशन ब्यूरो की भी इसमें भूमिका रहेगी।चूंकि यह बोइंग के विमान 787-8 ड्रीमलाइनर शृंखला का पहला ऐसा विमान है, जो हवा में हादसे का शिकार हुआ, इसलिए उसकी जांच के निष्कर्ष पर सभी की निगाहें टिकी रहेंगी।सरकारी स्वामित्व से अब टाटा समूह के नियंत्रण में आने के बाद एअर इंडिया के किसी विमान के साथ पहली बार ऐसा हादसा हुआ है।लगातार घाटा उठाने, सेवा, गुणवत्ता एवं मानकों के साथ समझौते और कर्मचारी संघों के खराब रवैये के चलते लोग सरकार से निरंतर सवाल करते

आ रहे थे कि वह इसे क्यों ढो रही है।इस सबके बावजूद तथ्य यह है कि सरकारी स्वामित्व के दौरान एअर इंडिया किसी हादसे का शिकार नहीं हुई, सिवाय तबके, जब जून 1985 में उसका विमान-कनिष्क वैश्विक आतंकवाद का शिकार बना था।कनाडा से भारत आ रही एअर इंडिया की फ्लाइट 182 को खालिस्तानी आतंकियों ने बम विस्फोट करके आसमान में ही उड़ा दिया गया था।विमान में विस्फोट के कारण उसमें सवार सभी 329 लोग मारे गए थे।विमान का मलबा आयरलैंड के समीप अटलांटिक महासागर में गिरा था। उम्मीद यह थी कि निजी स्वामित्व में एअर इंडिया का प्रदर्शन और सुधरेगा, लेकिन हकीकत यह है कि निजी कंपनी बनने के बाद सुरक्षा मानकों के उल्लंघन में एअर इंडिया सबसे ऊपर रही है और उसे डीजीसीए द्वारा लगाया गया वित्तीय हजार्ना भरना पड़ा।यह स्थिति प्रशिक्षण की गुणवत्ता में कमी, चालक दल की दक्षता में अभाव, रखरखाव से जुड़ी लापरवाहियों और लचर गुणवत्ता नियंत्रण के कारण निर्मित हुई।एअर इंडिया के बेड़े में 95 प्रतिशत विमान औसतन 18 से 20 साल पुराने हैं तो देर-सबेर विश्वसनीयता और गुणवत्ता के मोर्चे पर गिरावट के संकेत मिलने ही थे।अहमदाबाद में हमें यही देखने को मिला।सवाल उठ रहे हैं कि क्या इस विमान हादसे की गंभीरता को कम किया जा सकता था? लगता है कि विमान को इंजन से पर्याप्त पावर नहीं मिल पाई, जिससे वह पूरी उड़ान नहीं भर पाया या उड़ान जारी नहीं रख सका।यही पहलू बहुराष्ट्रीय जांचकताओं के लिए मूल मुद्दा होना चाहिए, क्योंकि इंजन मेंटेनेंस, डिजिटल इंजन कंट्रोल सिस्टम से लेकर 600 फीट पर एकाएक पावर सप्लाई खत्म होने की जांच की जाएगी हादसे की पड़ताल के साथ ही जवाबदेही सुनिश्चित किया जाना भी आवश्यक है।अब एअर इंडिया का स्वामित्व सरकारी नहीं, बल्कि टाटा समूह और सिंगापुर एयरलाइंस के पास है।यह प्रबंधन को और जवाबदेह बनाए जाने का एकदम सही समय है।इसमें किसी जुगाड़ वाली कामचलाऊ व्यवस्था के बजाय स्थायी उपायों पर ध्यान दिया जाए।जांच में चाहे जो निष्कर्ष निकलें, उन पर तत्काल अमल करना होगा।इन निष्कर्षों पर विश्व को भी ध्यान देना होगा।यदि रखरखाव से जुड़ी कमियां या लचर मेंटेनेंस ढांचे की गलती सामने आती है तो उसे तत्काल सुधारा जाए।इन कमियों ने कंपनी को अर्से से जकड़ा हुआ है।अगर विमानों का बेड़ा पुराना पड़ रहा है तो उसे बदला जाए।कंपनी नए विमानों की आवक से पहले अपना समूचा तंत्र सुधारे।हमें कई चीजें ठीक करनी होंगी।भारत में दिल्ली, मुंबई, बेंगलुरु, हैदराबाद, कोलकाता और बेंगलुरु समेत तमाम अन्य एयरपोर्ट की लोकेशन चिंता का विषय है।आपात स्थिति में जोखिम कहीं ज्यादा बढ़ जाता है। हर भारतीय हवाई अड्डा आधुनिक शहरीकरण से घिरा हुआ है।उनके आसपास आवासीय अपार्टमेंट, कार्यालय, कालेज, अस्पताल और माल आदि हैं।इसके चलते हवाई अड्डों के आसपास खाली जगह नहीं बची।इमरजेंसी लैंडिग की स्थिति में खाली पड़ी जमीन के चलते विमान तक सहायता पहुंचाने में आसानी होती है।यदि नीची उड़ान में इंजन फेल हो जाए तो पायलट विमान संभाल सकता है और दुर्घटना से बच सकता है। अभी तो ऐसा होने की शून्य संभावना है।देश को अपने सभी हवाई अड्डों की लोकेशन पर पुनर्विचार करना चाहिए।हवाई अड्डों को घनी शहरी बस्तियों से दूर स्थानांतरित करने की योजना बनानी चाहिए।यह एक लंबी, धीमी और कष्टकारी प्रक्रिया होगी, लेकिन इसे करना आवश्यक है।दस नियामकीय संस्थाएं, बोइंग कंपनी और करीब पांच देशों की सरकारों की अहमदाबाद हवाई हादसे पर निगाह होगी।यह हवाई हादसा अहमदाबाद यानी गुजरात के दिल में हुआ है।यह पीएम मोदी का गृह प्रदेश है।मुझे लगता है कि हमें निष्पक्ष, तटस्थ एवं स्वतंत्र जांच और कोर्ट आफ इन्क्वायरी देखने को मिलेगी।दुनिया जानना चाहती है कि अहमदाबाद में एअर इंडिया के बोइंग 787-8 ड्रीमलाइनर विमान के साथ क्या गलत हुआ? सही जांच और साक्ष्य ही यह इंगित करने के मुख्य आधार होंगे कि क्या गलत हुआ? जो लोग इस हादसे के लिए जिम्मेदार हों, उन्हें जवाबदेह ठहराने के साथ कानूनी तौर पर कठघरे में खड़ा किया जाना चाहिए, ताकि हम फिर कभी ऐसी तबाही न देखें।विश्व, भारत, एअर इंडिया, हवाई अड्डों और सुरक्षा नियामकों के पास बहुत काम है।उम्मीद है कि भारत सरकार और प्रधानमंत्री मोदी सख्त कदम उठाएंगे और दुनिया के लिए उदाहरण बन सकने वाले मानक स्थापित करेंगे।

बोइंग विमान हादसा : डरावना ब्लैक थर्सडे, लील गया कई जीवन की सांसे

संजीव ठाकुर

नमन, श्रद्धांजलि, ॐशांति ॐ।

बोइंग 787-8 ड्रीम लाइनर विमान के पायलट ने अहमदाबाद के वल्लभभाई पटेल अंतरराष्ट्रीय एयरपोर्ट से उड़ने से 15 सेकंड बाद उड़ते विमान का सबसे खतरनाक संदेश ₹ मेडे-मेडे-मेडे₹ एयर ट्रैफिक कंट्रोल अहमदाबाद एयरपोर्ट को भेजा था और तब ट्रैफिक कंट्रोल के संचालकों को यह मौका भी नहीं मिला कि वे इस फ्रांसीसी शब्द के मतलब विमान को खतरा के संकेत के बाद कोई सुरक्षा व्यवस्था कर पाते,इतनी ही देर में विमान मेडिकल कॉलेज के हॉस्टल में गिरकर आग का गोला बनकर तबाह हो गया और 230 यात्रियों और 12 विमान के क्रू मेंबर सहित काल के गाल में समा गये लेकिन ईश्वर की कृपा से एक यात्री रमेश विश्वास कुमार सकुशल बच गया, यह जीवित व्यक्ति खुद चलते हुए आपातकालीन रक्षक स्क्वाड के पास आया उसे तुरंत चिकित्सीय व्यवस्था करवाई गई, रमेश विश्वास कुमार भारतीय मूल के ब्रिटिश नागरिक हैं वे अपने भाई नीरज के साथ परिवारजनों से मिलने भारत आए हुए थे पर ईश्वर की लीला देखिए रमेश विश्वास कुमार तो अब कुशल जीवित हैं पर उनके भाई अब इस दुनिया में नहीं रहे वे विमान हादसे के शिकार हो गए।

इसी तरह जैसा की गुजरात के बीजेपी अध्यक्ष पाटील जी ने इस बात की पुष्टि की है कि गुजरात के पूर्व मुख्यमंत्री विजय रुपाणी भी इस विमान हादसे में दिवंगत हो गए हैं वे अपनी पत्नी को लाने लंदन जा रहे थे।विमान का संचालन पायलट सुमित सभरवाल कर रहे थे जिन्हें 8200 घंटे विमान उड़ाने का दीर्घ अनुभव था साथ में को पायलट ऑफिसर लाइव सुंदर भी थे जिन्हें 1100 घंटे विमान उड़ाने का भी अनुभव प्राप्त था दोनों पायलट इस विमान हादसे में काल-कवलित हो गए। इस विमान में 169 भारतीय 53 ब्रिटिश 7 पुर्तगाली और एक कनाडा का नागरिक भी था इनमें से रमेश विश्वास कुमार के अलावा किसी को यह कल्पना भी नहीं थी कि उनकी जिंदगी की अनमोल सांसें 60 सेकंड में रुक जाएगी और वे सब सब ईश्वर को प्यारे हो जाएंगे। अहमदाबाद एयरपोर्ट का रनवे 23 एक बार फिर चर्चा में आ गया है दुर्घटना अगस्त विमान बोइंग 787 9 ड्रीम लाइनर भी रनवे 23 से उड़कर लंदन जाने वाला था पर दुर्घटनाग्रस्त हो गया। इस घटना ने 1988 में हुए एक अन्य विमान हादसे की याद दिला दी अहमदाबाद में 1988 के बाद यह दूसरा बड़ा दर्दनाक विमान हादसा है महत्वपूर्ण बात यह है कि दोनों घटनाएं रनवे 23 से ही जुड़ी हुई है। 19 अक्टूबर 1988 को मुंबई से अहमदाबाद आर इंडियन एयरलाइंस का विमान इसी रनवे पर उतरने से पहले हादसे का शिकार हो गया था। इस विमान में 139 यात्री सवार थे जिनमें से 133 यात्रियों की मौत हो गई थी। गुरुवार को अहमदाबाद से लंदन उड़ान भरने वाले विमान ने रनवे 23 से ही उड़ान भरी थी। 1988 की विमान दुर्घटना की जांच में पाया गया था कि विमान पायलटो की गलती के कारण 500 फीट की न्यूनतम ऊंचाई से नीचे आ गया था रिपोर्ट के अनुसार दोनों पायलटो को रनवे देखने में समस्या हुई थी और उन्होंने एयरपोर्ट के पास पहुंचने का प्रयास किया था इसके कारण वह दुर्घटनाग्रस्त हो गया था 12 तारीख गुरुवार के बोइंग 787-8 विमान के दुर्घटनाग्रस्त होने का हालांकि नागरिक उड्डयन महानिदेशालय नें इस मामले में कोई आधिकारिक बयान नहीं दिया है पर यह दोनों दुर्घटनाएं रनवे 23 में ही हुई थी। पूर्व पायलट अधिकारियों ने कहा है कि बोइंग 787-8 ड्रीम लाइनर विश्व के सर्वाधिक सुरक्षित एवं सुगम यात्रा करने वाला विमान माना जाता है यह अत्यंत अत्यंत आधुनिक विमान भी था जिसकी फ्यूल कैपेसिटी 126000 लीटर एविएशन फ्यूल की थी और यह एक साथ 12 से 13 घंटे की उड़ान भरने वाला विमान जिसकी गति 900 किलोमीटर प्रति घंटे की थी का इस तरह दुर्घटनाग्रस्त होना और इसके दोनों इंजन अचानक फेल हो जाना एक असंभव सी बात नजर आती है।विमान में एक यात्री को छोड़कर 241 यात्रियों के शरीर काफी जल गए है जिंदगी पहचान करना भी एक बड़ा मुश्किल कार्य प्रशासन के सामने आ गया है इस संदर्भ में गुजरात प्रशासन के स्वास्थ्य विभाग में अपने बयान में कहा की मारे गए लोगों की पहचान के लिए डीएनए जांच कराई जाएगी।मृतकों की पहचान के लिए अहमदाबाद सिविल अस्पताल में डीएनए नमूने एकत्रित करने की व्यवस्था की जा रही जिसमें मृतकों के माता-पिता या बच्चे या उनके भाई-बहन अपने डीएनए नमूने दे सकते हैं। जिससे मृतकों की सही-सही पहचान की जा सकेगी। उल्लेखनीय है कि अहमदाबाद एयरपोर्ट की देखरेख का एवं संचालन का कार्य अडानी ग्रुप करता है एवं एयरलाइंस के विमान टाटा समूह संचालित करता है।इसी तारतम्य में टाटा समूह ने घोषणा की है कि सभी मृतक व्यक्तियों को मुआवजे के तौर पर एक-एक करोड रुपए प्रदान किये जाएगे।

यह बात अत्यंत सत्य है कि ₹जाको राखे साइयां मार सके ना कोय₹ इस कहावत को चरितार्थ करते हुए इस विमान दुर्घटना से जुड़ी महत्वपूर्ण खबर है कि अहमदाबाद विमान हादसे में ट्रैफिक जाम के कारण एक यात्री भूमि चौहान की जान बच गई एक निजी चैनल को इंटरव्यू देते हुए भूमि ने अत्यंत सहमीं हुई आवाज में बताया कि विमान हादसे की खबर सुनने के बाद मेरा शरीर कांप जाता है मैं कुछ बोल पाने की स्थिति में नहीं थी उन्होंने बताया कि ट्रैफिक जाम में फंसने के कारण भूमि 10 मिनट की देरी से सरदार वल्लभभाई पटेल एयरपोर्ट पहुंची थी जिसके कारण उन्हें अहमदाबाद लंदन की फ्लाइट में चढ़ने की अनुमति नहीं मिली जिससे वे अत्यंत दुखी होकर एग्जिट गेट तक पहुंच गई थी तभी उन्हें पता चला कि विमान दुर्घटनाग्रस्त हो गया है और उनकी जान बच गई है। अपनी जान बचाने के लिए ईश्वर को बहुत-बहुत आभार प्रेषित किया है भूमि चौहान 2 साल बाद लंदन से भारत में छुट्टियां मनाने आई थी उन्होंने भगवान को धन्यवाद देते हुए कहा कि मुझे गणपति बप्पा ने इस बड़े हादसे से बचा लिया है मैं ईश्वर की अत्यंत शुक्रगुजार हूं। उल्लेखनीय है कि बोइंग 787-8 ड्रीम लाइनर की खासियत अत्याधुनिक प्रौद्योगिकी और ईंधन बचाने वाले सक्षम विमान में गिनती की जाती है परंतु यह सदैव विवादों के घेरे में रहा है इसमें सुरक्षा बड़ा मुद्दा है इसके अलावा कई बार उत्पादक गुणवत्ता संबंधी खामियों भी सामने आई हैं अहमदाबाद हादसे ने इस पर फिर गंभीर सवाल खड़े किए हैं। 787 ड्रीमलाइनर परिवार के पहले संस्करण 787-8 को आधिकारिक तौर पर 2004 में लॉन्च किया गया था पहली उड़ान 15 दिसंबर 2009 को भरी थी इसके बाद अक्टूबर 2011 में ऑल निपान एयरवेज के साथ वाणिज्यिक सेवाओं में इसे लॉन्च किया गया था और इसकी उड़ान में 210 से 248 यात्री सफर कर सकते हैं।

घर को नमी और सीलन से बचाएं

विजय गर्ग

बारिश शुरू होने से पहले करें ये काम, फर्नीचर - दीवारें और छत रहेगी सुरक्षित मानसून में घर को सबसे ज्यादा नुकसान नमी और पानी से होता है।बारिश का पानी दीवारों और छत में रिसकर फफूंदी पैदा कर सकता है। लकड़ी के फर्नीचर, दरवाजे और खिड़कियां भी पानी की वजह से फूल या सड़ सकती हैं।साथ ही कुछ अन्य चीजों को भी नुकसान पहुंचता है।इसे नीचे दिए ग्राफिक से समझिए - मानसून से पहले घर की इन चीजों की कैसे देखभाल कर सकते हैं? मानसून के मौसम में पहले से कुछ तैयारी करना जरूरी है ताकि बारिश के पानी से कोई नुकसान न हो और घर सुरक्षित रहे।इसके लिए सबसे पहले घर के आसपास की नाली को अच्छी तरह से साफ कर लें।इससे पानी का जमाव नहीं होगा।इसके अलावा छत और दीवारों की दरारों को अच्छे से भरवाएं ताकि बारिश का पानी अंदर न आ सके।बाहरी दीवारों पर वाटरप्रूफ पेंट लगवाने से दीवारें नमी से बची रहती हैं।छत पर कबाड़ इकट्ठा न करें क्योंकि इससे पानी का जमाव हो सकता है और बाद में दिक्कतें पैदा हो सकती हैं।घर के अंदर की नमी को कम करने के लिए मानसून से पहले क्या तैयारियां कर सकते हैं? मानसून के मौसम में घर के अंदर की सही तैयारी करना बहुत जरूरी है, ताकि बारिश और नमी से कोई नुकसान न हो।नीचे दिए ग्राफिक में कुछ आसान टिप्स देखिए- जूतों और गीली चीजों के लिए अलग जगह बनाएं मानसून में घर में गंदगी और नमी बाहर से आने का खतरा ज्यादा रहता है। खासतौर पर जूतों, छतरियों और रेनकोट के जरिए।इस परेशानी से बचने के लिए घर के मुख्य दरवाजे के पास ही एक छोटा सा कॉर्नर बनाएं। वहां एक मजबूत और खुली जूता रैक रखें, जिसमें गीले जूते आराम से रखे जा सकें और वे सूखते भी रहें।साथ ही दीवार पर हुक या स्टैंड लगाकर छतरियों और रेनकोट को टांगने की जगह बनाएं। इसके नीचे एक पोंछा या पानी सोखने वाला मैट बिछा सकते हैं, जिससे टपकता पानी फर्श पर न फैले।फर्श पर बैंबू या रबर मैट का इस्तेमाल करें मानसून में कारपेट या कपड़े वाले मैट जल्दी गीले हो जाते हैं।इससे बदबू और फंगस का खतरा रहता है।इसलिए मानसून में कारपेट की जगह बैंबू या रबर से बने मैट बिछाना ज्यादा बेहतर है।ये न केवल पानी सोखने में मदद करते हैं, बल्कि जल्दी सूख जाते हैं। साथ ही इनकी सफाई भी आसान होती है।इन मैट्स को खासकर एंट्री पॉइंट्स, बाथरूम के बाहर, किचन एरिया और बालकनी में बिछाना चाहिए।

कीटों से बचाव के लिए पेस्ट कंट्रोल जरूरी मानसून में नमी बढ़ने के कारण कीड़े-मकोड़े, तिलचट्टे, चींटियां, दीमक और मच्छरों की संख्या तेजी से बढ़ती है। इसलिए मानसून से पहले ही एक बार प्रोफेशनल पेस्ट कंट्रोल करवाना जरूरी है।इससे कीटों के अंडों और छिपे हुए कीटों को खत्म किया जा सकता है। खासतौर पर रसोई, बाथरूम, स्टोर रूम और घर की दरारों वाले हिस्सों में फोकस करें।ये कीटों के छिपने की सबसे आम जगह होती हैं। अगर आप केमिकल से बचना चाहते हैं तो नीम का तेल, कपूर या लेमनग्रास जैसे नेचुरल रिपेलेंट का भी इस्तेमाल कर सकते हैं। घर में ताजी हवा का आना बहुत जरूरी अगर घर में वेंटिलेशन ठीक न हो तो नमी जमा होने लगती है, जिससे दीवारों पर फफूंदी (।४ल्लॅ४२), बदबू आने लगती है।इसलिए जरूरी है कि आप हर दिन कुछ समय के लिए खिड़कियां और दरवाजे खोलें ताकि घर में ताजी हवा और नेचुरल रोशनी आ सके।

इससे न केवल घर का माहौल हल्का और सुखद बनता है, बल्कि बैक्टीरिया और फंगस से भी बचाव होता है। अगर कोई ऐसी जगह है, जहां खिड़कियां नहीं हैं तो एग्जॉस्ट फैन लगवाना या डिह्यूमिडिफायर का इस्तेमाल करना अच्छा विकल्प है।

तीन जगह पर बड़े ट्यूबवेल का भूमि पूजन

- 2 साल में हमने 120 से अधिक ट्यूबवेल शहर भर मे लगाए, महापौर गणेश केसरवानी
- जॉर्जटाउन, टैगोर टाउन, व अल्लापुर में पानी की समस्या का समाधान महापौर ने बड़े ट्यूबवेल का भूमि पूजन किया।

भारत संवाद

दिन शनिवार को इस भीषण गर्मी में पेय जल की व्यापक व्यवस्था हेतु महापौर गणेश केसरवानी ने टैगोर टाउन, जॉर्जटाउन और अल्लापुर लोहा पार्क के समीप बड़े ट्यूबवेल के रिबोर का भूमि पूजन कर शिलान्यास किया।इस अवसर पर महापौर ने कहा जिससे क्षेत्र में पानी की समस्या का समाधान होगा, वर्षों से चली आ रही पानी की समस्या से निजात पाने के लिए यह परियोजना क्षेत्र को बड़ी राहत देगी, बड़े ट्यूबवेल के रिबोर से क्षेत्र में पानी की उपलब्धता में वृद्धि होगी और निवासियों को पर्याप्त पानी मिलेगा, इससे क्षेत्र की पानी की समस्या का समाधान होगा और निवासियों को राहत मिलेगी, इस परियोजना से क्षेत्र के विकास में भी मदद मिलेगी और निवासियों के जीवन स्तर में सुधार होगा।महापौर के इस कदम से क्षेत्र के निवासियों को बेहतर सुविधाएं मिलेगी ।इस अवसर पर क्षेत्रीय पार्षद आशीष द्विवेदी, पार्षद शिव सेवक सिंह, कुंज बिहारी मिश्रपुर पार्षद अलका श्रीवास्तव, जलकल विभाग के अवर अभियंता जेबा, संध्या, सीएनडीएस के अवर अभियंता मिथलेश पाल, कृष्णा महाजन प्रमोद साहू गणेश वर्मा अनिल भट्ट दिव्यांशु शुक्ला गिरीजेश मिश्रा राजन शुक्ला अमर सिंह विवेक मिश्रा आलोक शुक्ला आदि उपस्थित रहे ।

अहमदाबाद में हुए विमान दुर्धटना पर सम्पूर्ण प्रयागराज शोक में डूबा

नवनिर्मित भवन हॉल में शोक सभा का आयोजन

भारत संवाद

प्रयागराज। अहमदाबाद में हुए विमान दुर्धटना पर सम्पूर्ण प्रयागराज शोक में डूबा। मा0 महापौरा तथा सम्पूर्ण नगर निगम परिवार हुए गमगीन, किया शोक प्रकट। गुजरात के अहमदाबाद शहर में दिनांक 12 जून 2025 को हुए दुखद विमान हादसा में दिवांगत हुए लोगों के सम्बन्ध में नगर निगम प्रयागराज द्वारा आज दिनांक 14 जून 2025 को नवनिर्मित भवन हॉल में शोक सभा का आयोजन किया गया। जिसमें नगर निगम प्रयागराज के माननीय महापौर श्री उमेश चन्द्र गणेश केसरवानी समस्त कार्यकारिणी समिति के सदस्य, समस्त मा0 पार्षदगण एवं समस्त नगर निगम के अधिकारी एवं कर्मचारीगण उपस्थित हुए।यह दुर्घटना जब हुई तब माननीय महापौर जी प्रयागराज में नही थे उन्हों ने वही से बताया कि इस दुखद विमान हादसे के लिए शोक सभा का आयोजन किया जाए। इसी क्रमें नगर निगम के नवनिर्मित हाल में मा0 महापौर जी द्वारा एक शोक सभा का आयोजन किया गया है। अहमदाबाद में हुए विमान हादसे से पूरे विश्व में तथा सम्पूर्ण भारत वर्ष में शोक की लहर दौड गयी है माननीय महापौरा ने कहा कि एक दुखद विमान दुर्घटना जो हुई है, विमान जिस विल्डिंग पर गिरा उस जगह छात्र भोजन कर रहे थे तथा मेडिकल कालेज की बिल्डिंग थी किसी को भी, अपने आपको बचाने का एक मौका भी नही मिला इस दुर्घटना से हम सभी के हृदय को बहुत ही आहत पहुॅचा है। जिस प्रकार मिशन सिन्दूर की सफलता में सम्पूर्ण भारत वर्ष प्रसन्नता मना रहा था और हम सभी एक होकर उसकी सफला का जश्न माना रहे थे। उसी प्रकार इस विमान हादसे से हम सभी प्रयागराज वासी एवं नगर निगम परिवार शोक व्यक्त करते हुए उनकी दिवंगत आत्मा के लिए ईश्वर से प्रार्थना करते हुए मौन रखा गया। इसके उपरान्त बारी-बारी से अधिकारीगण एवं सभी मा0 पार्षदगण आपने-अपने विचारों में दुर्घटना ग्रस्त विमान हादसे में दिवंगत हुए लोगों की आत्माओं को श्रद्धाजली एवं उनके परिवार के लिए ईश्वर से प्रार्थना की गयी।

फास्ट ट्रैक

थाना चिल्ह पुलिस द्वारा एक नफर वारण्टी गिरफ्तार

भारत संवाद

सोमेन बर्मा वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक जनपद मीरजापुर द्वारा जनपद में अपराध की रोकथाम एवं अपराधियों के विरूद्ध चलाये जा रहे अभियान के क्रम में थाना चिल्ह पुलिस द्वारा एक नफर वारण्टी को गिरफ्तार किया गया । आज दिनांकः14.06.2025 को उप-निरीक्षक कुर्बान अली मय पुलिस टीम द्वारा एक नफर वारण्टी नन्दन पुत्र जवाहिर निवासी मवैया थाना चिल्ह जनपद मीरजापुर को उसके घर से गिरफ्तार कर मा0न्यायालय में प्रस्तुत किया गया ।

थाना अदलहाट पुलिस द्वारा नाबालिग को बहला-फुसला कर शादी का झांसा देकर भगाने के अभियोग से सम्बन्धित अभियुक्त गिरफ्तार, अपहृता बरामद

भारत संवाद

थाना अदलहाट, जनपद मीरजापुर पर दिनांकः13.06.2025 को एक महिला द्वारा नामजद अभियुक्तों के विरूद्ध के वादिनी की नाबालिग पुत्री को बहला फुसलाकर शादी का झांसा देकर भगा ले जाने तथा वादिनी द्वारा अभियुक्त के बुआ व फूफा से इस सम्बन्ध में पूछने पर गाली-गलौज व जान से मारने की धमकी देने के सम्बन्ध में लिखित तहरीर दी गयी ।उक्त के सम्बन्ध में प्राप्त तहरीर के आधार पर थाना अदलहाट पर मु0अ0सं0-187/2025 धारा 137(2),87,352,351(3) बीएनएस पंजीकृत कर विवेचना प्रारम्भ की गई ।सोमेन बर्मा वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक जनपद मीरजापुर द्वारा उक्त घटना को गंभीरता से लेते हुए क्षेत्राधिकारी चुनार के नेतृत्व में प्रभारी निरीक्षक अदलहाट को अभियुक्तों की गिरफ्तारी के निर्देश दिए गए । उक्त निर्देश के अनुक्रम में थाना अदलहाट पर पंजीकृत मुकदमा उपरोक्त में अग्रिम विवेचनात्मक कार्यवाही के क्रम में आज दिनांकः14.06.2025 को थाना अदलहाट पुलिस टीम द्वारा प्राप्त मुखबिर सूचना के आधार पर ग्राम टेढुआ के पास से नामजद अभियुक्त अभिषेक चौहान पुत्र रोशनलाल चौहान निवासी कोप थाना रसड़ा जनपद बलिया को गिरफ्तार कर अपहृता को बरामद किया गया । थाना अदलहाट पुलिस द्वारा नियमानुसार अग्रिम विधिक कार्यवाही करते हुए गिरफ्तार अभियुक्त को मा0न्यायालय/जेल भेजा गया ।

सौर ऊर्जा को बढ़ावा देने की दिशा में यूपीसीडा की बड़ी पहलः 13 नए स्थलों पर लगेंगे सौर संयंत्र

भारत संवाद

उत्तर प्रदेश के मा0 मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी के नेतृत्व में उत्तर प्रदेश राज्य औद्योगिक विकास प्राधिकरण (यूपीसीडा) प्रदेश के औद्योगिक ढांचे को मजबूत और आधुनिक बनाने की दिशा में लगातार कार्य कर रहा है, जिससे राज्य को 1 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनाने के लक्ष्य की ओर तेजी से अग्रसर किया जा सके। इसी विजन के तहत उत्तर प्रदेश राज्य औद्योगिक विकास प्राधिकरण (यूपीसीडा) पर्यावरण संरक्षण और नवीकरणीय ऊर्जा को प्रोत्साहित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठा रहा है। यूपीसीडा ने अपने सभी प्रशासनिक भवनों, कॉमन फैसिलिटी सेंटर (सीएफसी) भवनों, फील्ड हॉस्टलों और क्षेत्रीय कार्यालयों में सौर ऊर्जा संयंत्र स्थापित करने की योजना शुरू की है। यह पहल उत्तर प्रदेश की सौर ऊर्जा नीति 2022 के अनुरूप है, जिसका उद्देश्य कार्बन उत्सर्जन को कम करना और स्वच्छ ऊर्जा को बढ़ावा देना है। सौर औद्योगिक क्षेत्र की ओर अग्रसर उत्तर प्रदेशउत्तर प्रदेश के मा० मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी के नेतृत्व में राज्य सरकार पर्यावरण संरक्षण, ऊर्जा आत्मनिर्भरता और औद्योगिक विकास को एक साथ बढ़ावा देने के लिए कटिबद्ध है। मुख्यमंत्री जी का विजन है कि प्रदेश के औद्योगिक क्षेत्र न केवल उत्पादन में अग्रणी हों, बल्कि ऊर्जा के क्षेत्र में भी आत्मनिर्भर और हरित बनें। इसी दृष्टिकोण को साकार करने के लिए यूपीसीडा द्वारा सौर औद्योगिक क्षेत्र की अवधारणा को सक्रिय रूप से अपनाया जा रहा है। इस पहल के माध्यम से प्रदेश के प्रमुख औद्योगिक क्षेत्रों को सौर ऊर्जा से संचालित किया जाएगा, जिससे इन क्षेत्रों में संचालन लागत में कमी आएगी, कार्बन उत्सर्जन घटेगा और उत्तर प्रदेश, स्वच्छ व नवीकरणीय ऊर्जा के क्षेत्र में अग्रणी राज्य के रूप में अपनी पहचान मजबूत करेगा। यह पहल न केवल औद्योगिक संरचना को भविष्य के लिए तैयार करती है, बल्कि मुख्यमंत्री जी के 1 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था के लक्ष्य को प्राप्त करने की दिशा में भी एक बड़ा कदम है।

यूपीसीडा मुख्यालय: आत्मनिर्भर ऊर्जा की मिसाल

उत्तर प्रदेश राज्य औद्योगिक विकास प्राधिकरण (यूपीसीडा) की पर्यावरण के प्रति प्रतिबद्धता और ऊर्जा आत्मनिर्भरता की दिशा में एक प्रेरणादायक उदाहरण उसके कानपुर मुख्यालय में देखा जा सकता है। जनवरी 2024 में यहां 150 किलोवाट क्षमता का सौर ऊर्जा संयंत्र स्थापित किया गया, जो न केवल पर्यावरण संरक्षण का संदेश देता है, बल्कि वित्तीय दृष्टिकोण से भी अत्यंत लाभकारी सिद्ध हो रहा है ।यह संयंत्र 82.98 लाख की लागत से कैपेक्स मॉडल के तहत स्थापित किया गया, जिसमें यूपीनेडा (उत्तर प्रदेश नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा विकास अभिकरण) का तकनीकी सहयोग भी प्राप्त हुआ। इस मॉडल के अंतर्गत, संयंत्र की स्थापना के लिए शुरू में पूंजी निवेश किया गया और यह संयंत्र वर्षों तक बिना किसी बड़ी अतिरिक्त लागत के कार्य करता रहेगा।

सुरेश कुमार खन्ना ने आज लखनऊ नगर निगम के विभिन्न क्षेत्रों में हो रहे साफ-सफाई कार्यो का औचक निरीक्षण किया

निरीक्षण के दौरान वे नगर निगम 5री क्षेत्र के दो जोनों के चार वार्डो में गए

- जोनल अधिकारी, सफाई निरीक्षक सहित क्षेत्र के संबंधित सुपरवाइजर एवं सफाई कर्मियों का वेतन काटने का निर्देश दिया

भारत संवाद

लखनऊः उत्तर प्रदेश के वित्त एवं संसदीय कार्य मंत्री तथा जनपद लखनऊ के प्रभारी मंत्री श्री सुरेश कुमार खन्ना ने आज प्रातः लखनऊ नगर निगम के विभिन्न क्षेत्रों में हो रहे साफ सफाई कार्यो का औचक निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान वे नगर निगम क्षेत्र के दो जोनों के चार वार्डो में गए। मंत्री जी सफाई व्यवस्था को लेकर काफी नाराज दिखे और जिम्मेदार लोगों को फटकार लगाई। उन्होंने जोनल अधिकारी, सफाई निरीक्षक सहित क्षेत्र के संबंधित सुपरवाइजर एवं सफाई कर्मियों का वेतन काटने का निर्देश दिया। प्रभारी मंत्री ने जोन एक के रानी लक्ष्मीबाई वार्ड के अमीनाबाद में घंटाघर पार्क, जोन 3 में डालीगंज निराला नगर वार्ड, अयोध्या दास द्वितीय वार्ड एवं फैजुल्लागंज द्वितीय वार्ड का निरीक्षण किया। प्रभारी मंत्री को सभी वार्डों में सफाई कार्य में लापरवाही दिखी, विशेष कर नालियों की सफाई। अधिकांश क्षेत्रों में नालियों में जल जमाव की स्थिति थी। उन्होंने नगर निगम के संबंधित अधिकारियों को फटकार लगाते हुए निर्देश दिया कि सभी संबंधित अधिकारी अपने-अपने क्षेत्रों में नियमित निरीक्षण करें और सफाई व्यवस्था को चुस्त दुरूस्त बनाएं। प्रभारी मंत्री ने अमीनाबाद में घंटाघर वाले पार्क में कूड़े का ढेर देखकर नाराजगी जाहिर की उन्होंने निर्देश दिया कि पार्क की जमीन पर वृक्षारोपण और इसका सौंदरीकरण कराया जाए। इस क्षेत्र में उन्होंने एक सीसी रोड के निर्माण के भी निर्देश दिए। यहां पर बन रही पानी की टंकी के संबंध में उन्होंने जानकारी ली और निर्देश दिया कि जल निगम के साथ समन्वय बनाकर इसके निर्माण में तेजी लाई जाए। उन्होंने कहा कि लखनऊ का अमीनाबाद क्षेत्र पूरे देश में प्रसिद्ध है। उन्होंने अतिक्रमण एवं रोड पर कूड़ा जमाव को लेकर नगर निगम के अधिकारियों को सख्त निर्देश दिया। उन्होंने जोनल अधिकारी से लेकर सफाईकर्मी तक सभी जिम्मेदार कार्मिकों के एक-एक दिन के वेतन काटने के निर्देश दिये। श्री सुरेश कुमार खन्ना को निरीक्षण के दौरान डालीगंज निराला नगर वार्ड के स्थानीय लोगों ने बताया कि कूड़े की गाड़ी कभी-कभी आती है। यद्यपि डोर-टू-डोर कलेक्शन का कार्य हो रहा है। पीने के पानी की व्यवस्था ठीक नहीं है। नालियों की सफाई काफी दिनों से नहीं हुई थी। उन्होंने जोनल अधिकारी एवं अन्य सफाई से संबंधित सभी लोगों का एक दिन का वेतन काटने का निर्देश दिया। इस क्षेत्र में 90 सफाई कर्मी कार्यरत हैं।

थाना विन्ध्याचल पुलिस द्वारा नाबालिग को बहला-फुसला कर भगाने एवं सामूहिक दुष्कर्म करने के अभियोग से सम्बन्धित अभियुक्ता गिरफ्तार

भारत संवाद

थाना विन्ध्याचल, जनपद मीरजापुर पर दिनांकः03.05.2025 को एक व्यक्ति द्वारा नामजद अभियुक्त के विरूद्ध के वादी की नाबालिग पुत्री को बहला फुसलाकर भगा ले जाने के सम्बन्ध में लिखित तहरीर दी गयी ।उक्त के सम्बन्ध में प्राप्त तहरीर के आधार पर थाना विन्ध्याचल पर मु0अ0सं0-134/2025 धारा 137(2),142 बीएनएस पंजीकृत कर विवेचना प्रारम्भ की गई ।सोमेन बर्मा वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक जनपद मीरजापुर द्वारा उक्त घटना को गंभीरता से लेते हुए क्षेत्राधिकारी नगर के नेतृत्व में थानाध्यक्ष विन्ध्याचल को अपहृता की बरामदगी एवं अभियुक्त की गिरफ्तारी कराये जाने के निर्देश दिए गए । उक्त निर्देश के अनुक्रम में थाना विन्ध्याचल पुलिस द्वारा अपहृता को पूर्व में बरामद कर अभियोग से सम्बन्धित 04 नफर अभियुक्तों की गिरफ्तारी का जा चुकी है ।थाना विन्ध्याचल पर पंजीकृत मु0अ0सं0-134/2025 धारा 137(2),142,64(1),70,61(2) बीएनएस व 5/6(छ) पॉक्सो एक्ट में अग्रिम विवेचनात्मक कार्यवाही के क्रम में आज दिनांकः14.06.2025 को थानाध्यक्ष विन्ध्याचल-अमित कुमार मय पुलिस टीम द्वारा प्राप्त मुखबिर सूचना के आधार पर थाना विन्ध्याचल क्षेत्र से नामजद/विवेचना के दौरान प्रकाश में आयी अभियुक्ता नीतू गुप्ता पत्नी रोहित निवासी ब्लाक नं0-20 कांशीराम आवास गोसाईपुरवां थाना विन्ध्याचल जनपद मीरजापुर को गिरफ्तार कर नियमानुसार अग्रिम विधिक कार्यवाही करते हुए मा0न्यायालय/जेल भेजा गया ।

वादा खिलाफी कर रहा शिक्षा सेवा चयन आयोग

भारत संवाद

- 16 जून 2025 को पुनः युवा मंच के नेतृत्व में आयोग की अध्यक्ष से टी०जी०टी०परीक्षा की स्थिति स्पष्ट करने को लेकर होगी वार्ता

प्रयागराज 14/06/2025 टी०जी०टी० व पी०जी०टी० की परीक्षा को लेकर स्थिति स्पष्ट करने को लेकर प्रचंड गर्मी में युवा मंच के नेतृत्व में उत्तर प्रदेश शिक्षा सेवा चयन आयोग पर आन्दोलन के वाद आयोग द्वारा पी०जी०टी० परीक्षा पर स्थिति स्पष्ट कर अगस्त के अंतिम सप्ताह में परीक्षा कराने सम्बन्धी नोटिस जारी कर दिया गया लेकिन टी०जी०टी० परीक्षा को लेकर आयोग द्वारा अभी तक स्थिति स्पष्ट नहीं की गई जो बहुत ही निन्दनीय है। युवा मंच के प्रदेश अध्यक्ष एड०अनिल सिंह का कहना है कि शिक्षा सेवा चयन आयोग की एक हालिया बैठक में माननीय अध्यक्ष महोदय द्वारा उप सचिव शिव जी मालवीय के हवाले से युवा मंच के प्रतिनिधि मण्डल को आश्वासन दिया गया था कि आपातकालीन मीटिंग बुलाकर टीजीटी परीक्षा की तिथि के सम्बन्ध विधिवत सूचना आयोग की वेबसाइट पर नोटिस के माध्यम से दी जाएगी किन्तु अत्यंत खेदजनक है कि अभी तक शिक्षा सेवा चयन आयोग द्वारा कोई अधिकारिक सूचना या संशोधित परीक्षा तिथि आयोग की वेबसाइट पर प्रकाशित नहीं की गई है। इससे लाखों प्रतियोगी छात्र-छात्राओं में भ्रम और मानसिक तनाव की स्थिति बनी हुई है। परीक्षा की अनिश्चितता के कारण छात्र अपनी पढ़ाई की रणनीति भी तय नहीं कर पा रहे हैं आयोग को अब तक परीक्षा की संशोधित तिथि एवं संबंधित जानकारी यथाशीघ्र आयोग की वेबसाइट पर नोटिस के माध्यम से प्रकाशित कर देनी चाहिए, जिससे सभी अभ्यर्थियों को उचित मार्गदर्शन प्राप्त हो सके और वे अपनी तैयारी सुचारू ढंग से करें 16जून 2025 को शिक्षा सेवा चयन आयोग से परीक्षा के सम्बन्ध में स्पष्ट नोटिस जारी कराने को लेकर युवा मंच के नेतृत्व में अध्यक्ष से मुलाकात की जाएगी।

इफको फूलपुर इकाई को इस वर्ष 24वां इनोवेटिव इनवायरमेंट टेक्नोलॉजी एडॉप्शन अवार्ड 2025 प्राप्त हुआ

भारत संवाद

इफको फूलपुर इकाई को इस वर्ष 24वां इनोवेटिव इनवायरमेंट टेक्नोलॉजी एडॉप्शन अवार्ड 2025 प्राप्त हुआ।इस पुरस्कार को नई दिल्ली में आयोजित एक समारोह में इफको फूलपुर इकाई के वरिष्ठ कार्यकारी निदेशक संजय कुदेशिया ने प्राप्त किया ।इस अवसर पर उनके साथ उमेश कुमार वरिष्ठ प्रबंधक प्रयावरण मौजूद रहे ।यह पुरस्कार इकाई, संगठन या क्षेत्र द्वारा पर्यावरण संरक्षण में सुधारके लिए पर्यावरणीय प्रबंधन मानकों को पूरा करने तथा एक आदर्श पर्यावरण व प्रदूषण मुक्त व्यवस्था हेतू नई तकनीक अपनाने के लिए दिया जाता है। इफको फूलपुर इकाई को पर्यावरण संतुलन को व्यवस्थित बनाने, संयंत्र व कालोनी में वृहद वृक्षारोपण के लिए पुरस्कार दिया गया। जिसपर कार्यकारी निदेशक (तकनीकी) संजय वैश्य, विभागाध्यक्ष शम्भू शेखर, प्रबंधक ई.पी.सी. मनोज कुमार, इफको ऑफिसर्स एसोसिएशन के अध्यक्ष अनुराग तिवारी व महामंत्री स्वयम् प्रकाश, इफको इम्पलाइज संघ के अध्यक्ष पंकज पाण्डेय व महामंत्री विजय कुमार यादव, ने इफको फूलपुर इकाई को 24वां इनोवेटिव इनवायरमेंट टेक्नोलॉजी एडॉप्शन अवार्ड प्राप्त होने पर हर्ष व्यक्त किया।

समर हॉबी कैम्प का समापन समारोह आयोजित

समर हॉबी कैम्प में कुल 142 बच्चों ने लिया भाग

भारत संवाद

उत्तर मध्य रेलवे महिला कल्याण संगठन, मुख्यालय, प्रयागराज की ओर से आयोजित समर हॉबी कैम्प का समापन समारोह दिनांक 14.06.2025 को आयोजित किया गया। लगभग एक महीने तक चले समर हॉबी कैम्प में कुल 142 बच्चों ने भाग लिया। समर हॉबी कैम्प में स्केटिंग, आर्ट एवं क्राफ्ट, नृत्य तथा तायक्वोंडो कोर्सो को सफलतापूर्वक सिखाया गया। इस समारोह के मुख्य अतिथि माननीय श्री उपेन्द्र चन्द्र जोशी, महाप्रबंधक, उत्तर मध्य रेलवे, प्रयागराज थे।इस अवसर पर समर कैम्प में सिखाये गये डांस के बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किये गये।इन बच्चों द्वारा विभिन्न प्रकार के सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति की गयी। इस कार्यक्रम से प्रसन्न होकर माननीय महाप्रबंधक महोदय ने सभी बच्चों को अपनी शुभकामनायें दीं एवं संदेश दिया कि समर कैंप का मुख्य उद्देश्य बच्चों का सवार्गीण विकास करना है, जिसमें शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक और सामाजिक विकास शामिल है। यह बच्चों को नए कौशल सीखने, आत्मविश्वास बढ़ाने, सामाजिक संपर्क बनाने और एक सुरक्षित और मजेदार महौल में सकारात्मक अनुभव प्राप्त करने का अवसर प्रदान करता है। साथ ही बच्चों को सक्रिय बनाने और स्क्रीन टाइम कम करने के लिये आदर्श है। इस अवसर पर महाप्रबंधक महोदय द्वारा सभी शिक्षकों को प्रमाण-पत्र एवं संगठन को सहयोग देने वाले कर्मचारियों को सम्मानित किया गया। इस अवसर पर संगठन की सभी सदस्यायें एवं उत्तर मध्य रेलवे के विभागाध्यक्ष के साथ-साथ अन्य अधिकारीगण उपस्थित रहें।

सम्मेलन स्वामी चिदानन्द सरस्वती जी ने दिया संदेश अब दुनिया को युद्ध नहीं योग चाहियें

योग कनेक्ट, वैश्विक योग सम्मेलन में स्वामी चिदानन्द सरस्वती जी की गरिमामयी उपस्थिति

भारत संवाद

- योग कनेक्ट, वैश्विक योग सम्मेलन में गूंजा एक धरती, एक स्वास्थ्य का संदेश
- विज्ञान भवन दिल्ली में आयुष मंत्रालय द्वारा आयोजित योग कनेक्ट वैश्विक सम्मेलन में परमार्थ निकेतन के अध्यक्ष स्वामी चिदानन्द सरस्वती जी, योगगुरू स्वामी रामदेव जी और विश्व विख्यात विभूतियों की गरिमामयी उपस्थिति

नई दिल्ली ।विज्ञान भवन के भव्य प्रांगण में आज योग कनेक्ट योग सम्मेलन, का आयोजन हुआ।जो योग को वैश्विक संवाद, सहयोग और समरसता का सेतु बनाने की दिशा में एक अनूठा प्रयास है। यह सम्मेलन भारत की योग परंपरा की गौरवपूर्ण अभिव्यक्ति है। साथ ही यह उस जागरूकता और प्रतिबद्धता का भी प्रतीक है, जो आज पूरी दुनिया में योग और समग्र स्वास्थ्य के लिए देखी जा रही है। योग कनेक्ट ने योग गुरुओं, नीति निमार्ताओं, स्वास्थ्य विशेषज्ञों, अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं, सामाजिक प्रभावकों और विभिन्न देशों के प्रतिनिधियों को एक मंच पर लाकर योग के आधुनिक स्वरूप, वैश्विक प्रभाव और भविष्य की दिशा पर व्यापक संवाद का अवसर प्रदान किया। यह एक दिवसीय सम्मेलन अपनी गहराई, विविधता और संदेश में अत्यंत व्यापक रहा। सम्मेलन का उद्घाटन सत्र योग फार वन अर्थ, वन हैल्थ विषय पर केंद्रित रहा, जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में परमार्थ निकेतन के अध्यक्ष स्वामी चिदानन्द सरस्वती जी, विख्यात योग गुरू स्वामी रामदेव जी, योगाचार्य हंसा योगेन्द्र जी, आयुष राज्य मंत्री श्री प्रताप राव जाधव जी, श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत (संस्कृति व पर्यटन मंत्री), माननीय सचिव, श्री वैद्य राजेश कोटेजा जी, श्री सुबोध तिवारी जी, मोनालिसा दास जी, श्री राधवेन्द्र राव जी और सहित कई गणमान्य विभूतियों की गरिमामयी उपस्थिति रही। सभी विभूतियों ने दीप प्रज्वलित कर योग कनेक्ट सम्मेलन का शुभारम्भ किया।

सम्मेलन का एक प्रमुख आकर्षण योग प्रभाव रिपोर्ट का विमोचन, जिसमें पिछले 10 वर्षों में अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के प्रभाव, सामाजिक जागरूकता और व्यक्तिगत जीवन में आए परिवर्तनों को दशार्या गया। यह रिपोर्ट दशार्ती है कि कैसे योग ने न केवल शरीर और मन को जोड़ा, बल्कि जन-जन को संस्कार, संयम और सत्कर्म की दिशा में प्रेरित किया।

इस अवसर पर स्वामी चिदानन्द सरस्वती जी ने कहा कि आज हम योग कनेक्ट सम्मेलन में एकत्र नहीं एकजुट हुये हैं। योग केवल शारीरिक व्यायाम नहीं, बल्कि आत्मिक शांति, वैश्विक सौहार्द और समग्र एकता का प्रतीक है। जब दुनिया विभिन्न संघर्षों और विघटन के दौर से गुजर रही है, तब भारत की पावन धरती से योग के माध्यम से यह संदेश जाना चाहिए कि युद्ध किसी समस्या का समाधान नहीं, योग ही जीवन जीने का मार्ग है।

आज विश्व टुकड़ों में बंटा हुआ है, पीसेस में है परंतु हमारी सबसे बड़ी आवश्यकता है पीस (शान्ति) की। यह हमारे हाथ में है कि हम टुकड़ों में बिखरे रहें या एकजुट होकर शांति का मार्ग चुनें। योग यही सिखाता है एकत्व, संतुलन और समरसता के साथ जीना।

हम एआई (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) के युग में प्रवेश कर चुके हैं, जहाँ तकनीक तीव्रता से जीवन को बदल रही है परंतु भारत की जड़ें आरआई (ऋषि इंटेलिजेंस) में हैं, जो आत्मज्ञान, विवेक और संवेदनशीलता पर आधारित है। योग इन दोनों के बीच एक सशक्त सेतु है, जो आधुनिकता को मूल्यों से जोड़ता है इसलिए योग को अपनाना न केवल हमारे शरीर और मन के लिए आवश्यक हैं।

पंडित हीरालाल विधि महाविद्यालय का शुभारंभ

भारत संवाद

अंतू, प्रतापगढ़ (उ. प्र.) में स्थित पंडित हीरालाल विधि महाविद्यालय का शुभारंभ होने पर क्षेत्रवासियों में खुशी की लहर है। इस महाविद्यालय की अध्यक्ष डॉ. सीमा मिश्रा तथा संरक्षक पूर्व विधायक बृजेश सौरभ हैं। यह महाविद्यालय प्रो. राजेंद्र सिंह रज्जू भैया, प्रयागराज एवं बार काउंसिल ऑफ इंडिया नई दिल्ली द्वारा मान्यता प्राप्त है, जिसमें त्रिवर्षीय एल एल बी के संचालन हेतु 120 सीटें स्वीकृत हैं। शैक्षिक सत्र 25-26 के लिए प्रवेश प्रारंभ हो चुका है। गौरवतलब रहे कि बृजेश सौरभ मूल रूप से अंतू के कपासी गांव के रहने वाले हैं। इन्होंने शिक्षा एवं स्वास्थ के साथ बुनियादी व्यवस्थाओं को जिले में स्थापित करने का महानीय कार्य किया है। पंडित हीरालाल छविराज कुंवरि जी महाविद्यालय की स्थापना करके अंतू में उच्च शिक्षा की एक अलख जगाई। जिसमें बी ए, एम ए, बी एड जैसे कई कोर्स संचालित किए जा रहे हैं। सौरभ का कहना है कि जब उच्च शिक्षा गांव के अंतिम व्यक्ति को प्रदान की जाएगी, तभी सही मायने में भारत को सशक्त और स्वर्णिम बनाया जा सकेगा, क्योंकि भारत के विकास का रास्ता गांव से ही होकर गुजरता है। यदि गांव शिक्षित एवं सशक्त बनेगा तो राष्ट्र स्वमेव प्रगति के नित नए सोपान गढ़ेगा। सौरभ का समूचा जीवन गांव, समाज एवं राष्ट्र को समर्पित है।

महापौर ने किया सड़क व नाली निर्माण कार्य का शुभारंभ

भारत संवाद

सहारनपुर । महापौर डॉ.अजय कुमार ने नगर विधायक राजीव गुंबर के साथ आज वार्ड संख्या 6 वर्धमान कॉलोनी में एक सड़क एवं नाली निर्माण कार्य का पूजा अर्चना के बीच सड़क पर गेंती चलाकर शुभारंभ किया।नगर निगम द्वारा 38 लाख रुपए की लागत से यह निर्माण कार्य पूरा होगा। इस अवसर पर महापौर डॉ अजय कुमार ने कहा कि यह बहुप्रतीक्षित विकास कार्य क्षेत्रवासियों को बेहतर बुनियादी सुविधाएं प्रदान करने की दिशा में नगर निगम का एक महत्वपूर्ण कदम है।सड़क के निर्माण से जहां आमजन को आवागमन में सुविधा प्राप्त होगी, वहीं नाली निर्माण से जलभराव जैसी समस्याओं से स्थायी राहत मिलेगी।

इस अवसर पर महानगर अध्यक्ष शीतल बिश्नोई, पूर्व महानगर अध्यक्ष राकेश जैन, पार्षद नीरज शर्मा, मंडल अध्यक्ष विजय वर्मा पार्षद प्रतिनिधि विनोद सैनी सहित बड़ी संख्या मे क्षेत्रवासी उपस्थित रहे।

जनता देश संगठन ने समूह सखी की मांगों को लेकर दिया धरना

भारत संवाद

सहारनपुर। राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन के तहत कार्य करने वाली महिलाओं को उचित मानदेय दिये जाने की मांग लेकर जनता देश संगठन आज प्रदर्शन कर धरना दिया और प्रदेश के मुख्यमंत्री को संबंध ज्ञापन जिला प्रशासन को दिया।

आज पूर्व घोषित कार्यक्रम के मुताबिक हकीकत नगर के रामलीला मैदान पर जनता देश संगठन से जुड़ी समूह-सखी महिलाओं (जो कि पिछले कई वर्षो से राष्ट्रीय ग्रामीण आजिविका मिशन, के तहत विभाग में कार्यरत हैं।) को उचित वेतन नहीं मिल रहा है। जब कि इन समूह-सखी महिलाओं से हर क्षेत्र में कार्य करवाया जाता है।जैसेः प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना, जीवन ज्योति बीमा योजना, पशु टीकाकरण योजना, मिशन

अंत्योदय योजना इत्यादि। बावजूद इसक इन्हें न्यूनतम वेतन महज 800/- रूपए प्रतिमाह दिया जाता है।जब कि शहर में होने वाली कोई भी मिटिंग या प्रोग्रामों में होने वाला खर्च यह समूह-सखी स्वयं से निर्वहन करती है।जिस कारण समूह-सखी महिलाएँ अपना जीवन-यापन उचित रूप से नही कर पा रही है।

जनता देश संगठन (जेडीएस) समूह-सखी महिलाओं ने मांगों का समर्थन करता है।तथा सरकार से यह मांग करता है कि समूह-सखी महिलाओं का बेसिक वेतन 18 हजार रूपए प्रति माह, विभाग में स्थायी नियुक्ति तथा (मातृत्व लाभ अधिनियम 1961) के तहत संपूर्ण सुविधाएं प्राप्त होनी चाहिए।यदि सरकार महिलाओं की समस्या का समाधान नहीं करती है।तो संगठन कड़े कदम उठाने के लिए बाध्य होगा।जिसकी समस्त जिम्मेदारी जिला प्रशासन तथा राज्य सरकार की होगी।

इस अवसर पर जनता देश संगठन (जेडीएस) के संस्थापक एवं राष्ट्रीय अध्यक्ष सुरेश कुमार (फौजी), राष्ट्रीय महासचिव एवं अध्यक्षा महिला विंग एड० पिंकी पवन शिंदे, मुख्य सलाहकार राजेश्वर दास सैनी, राष्ट्रीय प्रवक्ता मांगेराम कश्यप, प्रदेश अध्यक्ष सुभाष बर्मन, मण्डल अध्यक्ष श्रीपाल सिंह, जिला अध्यक्ष सौरभ सिंह, मिडिया प्रभारी बॉबी कुमार, श्रीमति बबीता कश्यप, अध्यक्षा समूह-सखी,।बरखा, निर्मला उमा, कोमल, लक्ष्मी, ममतेश, रुखसार, सुमन, सीमा, आदि प्रमुख रूप से मौजूद रहे।

फास्ट ट्रैक

मीठे जल की छबील लगायी

भारत संवाद

सहारनपुर। आज सभी मेडिकल रिप्रेजेन्टेटिव के सहयोग से इस चिलचिलाती गर्मी में लोगों की प्यास बुझाने को लेकर एक मीठे पानी की छबील का आयोजन तिकोनी कोठी के पास किया गया।पिछले 5 वर्षो से सभी साथियो के सहयोग से जून माह में इस कार्यक्रम का आयोजन किया जाता है ! कार्यक्रम संयोजक और सभी साथियों की सलाह से इस भयानक गर्मी के मौसम में लोगो को राहत देने के लिए मीठे पानी की छबील प्रतिवर्ष लगायी जाती है और लोगो को पानी वितरित किया जाता है इस घड़ी में हजारों राहांगीरों ने मीठा शरबत पीकर आती प्यास बुझाई और इस कार्यक्रम को लेकर सभी लोगों का धन्यवाद किया और उनकी प्रशंसा की। इस कार्यक्रम में सतवीर चैधरी, शिवम्-तनेजा, शुभम बठला, सलमान, मनोज कुमार , वरुण शर्मा, दीपक त्यागी, शुभम शर्मा, अरुण कुमार आदि साथियो ने जल वितरित कर पुण्य अर्जित किया

बसपा ने लगाया रक्तदान शिविर

भारत संवाद

सहारनपुर।बसपा के मंडल कार्यलय देहरादून चैक पर लगे ब्लड शिविर शिविर लगाया गया जिसका उद्घाटन संयुक रूप से पार्टी के जिलाध्यक्ष जगपाल सिंह व मण्डल कोर्डिनेटर सरफराज राइन ने किया।इस दौरान दोनों नेताओं ने संयुक्त ब्यान देते हुए कहा कि जो युवा ब्लड डोनेट कर रहे हैं वो एक साधनहै एक दूसरे की जान बचाने का।चाहे वो हिन्दू हो या मुसलमान उस ब्लड में किसी जाति का नाम नही होता, अगर हो भी तो जान अगर किसकी जाने को हो तो उस खून को मना नही कर सकता ये एक महादान है। इस मौके पर नरेन्द्र कुमार, जितेंद ,ओमपाल, कार्यालय प्रभारी नरेश सिंह, राजबीर प्रमोद,राजीव कुमार आदि मौजूद रहें।

बाईक सवार पिता पुत्री कि मौत पत्नि गम्भीर घायल

भारत संवाद

सहारनपुर।थाना देबंद के ग्राम खुड्डा निवासी सद्दाम अपनी पत्नि और चार वर्षीय बच्चीके साथ देवबंद कोतवाली के गांव तल्हेड़ी बुजुर्ग ससुराल जा रहा था जैसे ही वह देवबंद कोतवाली क्षेत्र कि गोपाल चैकी के निकट पहुंचा तो अनियन्त्रित पिकअप ने बाईक को जोरदार टक्कर मार दी बाईक सवार सद्दाम उसकी पत्नि और चार वर्षीय मासूम गम्भीर घायल हो गए घटना कि सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और सभी घायलो को नगर के सरकारी अस्पताल में भर्ती कराया जहां पर डांक्टरो ने सद्दाम और उसकी मासूम पुत्री को मृत घोषित कर दिया वहीँ पत्नि का उपचार जारी इस घटना के बाद पिकअप चालक फरार बताया जा रहा है !पुलिस ने दोनो शवो के पंचनामें भर पोस्टमार्टम के लिए भेजा और फरार पिकअप चालक कि धरपकड़ में जुट गई है।

कांग्रेस का संविधान बचाओ सम्मेलन

जिलाध्यक्ष बोले- मोदी सरकार लोकतांत्रिक संस्थाओं का कर रही राजनीतिकरण

भारत संवाद

सुलतानपुर, कादीपुर विधानसभा क्षेत्र में शनिवार को कांग्रेस पार्टी ने विधानसभा स्तरीय 'संविधान बचाओ सम्मेलन' का आयोजन किया।कार्यक्रम में कांग्रेस जिलाध्यक्ष अभिषेक सिंह राणा, जिले के कोऑर्डिनेटर अर्जुन पासी, उज्जवल शुक्ला और शहर कॉर्डिनेटर संदीप त्रिपाठी समेत पार्टी के अन्य नेता मौजूद रहे। कांग्रेस जिलाध्यक्ष अभिषेक सिंह राणा ने कहा कि मोदी सरकार संवैधानिक और लोकतांत्रिक संस्थाओं का राजनीतिकरण कर रही है।उन्होंने कहा कि कांग्रेस का हर कार्यकर्ता बाबा साहेब के संविधान की रक्षा के लिए संकल्पित है।

2 जुलाई को निकाली जाएगी भगवान जगन्नाथ यात्रा

भारत संवाद

सहारनपुर। घंटाघर स्थित कार्यालय पर आज श्री जगन्नाथ रथ यात्रा समिति द्वारा एक बैठक का आयोजन किया गया जिसमें भगवान जगन्नाथ जी की शोभायात्रा के अवसर पर कार्यक्रम को लेकर चर्चा हुई और किस प्रकार इसको और भव्य सुंदर बनाया जाए इसको लेकर सभी कमेटी के सदस्यों के द्वारा विचार विमर्श हुआ इस अवसर पर जगन्नाथ रथ यात्रा समिति के अध्यक्ष भारत कर्णवाल व सभी सदस्यों ने इस वर्ष 2 जुलाई को भगवान जगन्नाथ की शोभायात्रा भगत सिंह चैक से प्रारंभ होगी और हरी मंदिर आवास विकास कॉलोनी दिल्ली रोड पर इसका विश्राम होगा इस शोभायात्रा में देश-विदेश से भगवान जगन्नाथ जी की शोभायात्रा में प्रतिभाग करने भक्तजन पहुंचेंगे इसका आकर्षण इस वर्ष भी 40 फुटा ट्राला जिस पर हरि नाम का कीर्तन किया जाएगा जो की रॉक शो द्वारा होगा अध्यक्ष संजय कर्णवाल अपने विचार को व्यक्त करते हुए समस्त व्यक्तियों को इस संदर्भ में अवगत कराया की 28 जून से 29 जून एवं 30 जून को जानकी धाम मंदिर पर भगवान जगन्नाथ जी की कथा प्रारंभ की जाएगी जिसमें प्रत्येक दिन वहां पर हजारों की

संख्या में भक्तजन कथा सुनेंगे बैठक में रम्मी धवन ने अपने विचार को व्यक्त करते हुए कहा की जगत के जगन्नाथ अपने भक्तों का उद्धार करने के लिए आ रहे हैं इस अवसर पर हमारे वरिष्ठ समाजसेवी राजकुमार सैनी ने अपने विचार व्यक्त किया कि भगवान का संसार में अवतरित होना हमारे लिए अति सौभाग्य की बात है इस अवसर पर महामंत्री संजीव शर्मा ने बताया कि भगवान जगन्नाथ की रथ यात्रा के शुभ अवसर पर समस्त भक्तों तथा व्यापारियों द्वारा फूलों की वर्षा की जाएगी और उनके आगमन पर जगह-जगह स्टाल लगाए जाएंगे प्रसाद वितरित किया जाएगा और इसमें सुंदर-सुंदर झांकियां भी होगी जो लोगों के आकर्षण का केंद्र बनेंगी उन्होंने यह भी कहा की भक्तों को इस शोभायात्रा का बड़ी उत्सुकता से इंतजार रहता है और लोग इस शोभायात्रा में हिस्सा लेते हैं बैठक मुख्य रूप से दिनेश गर्ग मुकेश सेठी मुकेश दीक्षित राजीव शर्मा प्रवेश धवन राजीव कार्निवल मुकेश मेहता ललित पोपली शेखर कर्नवाल आशीष महाजन,, गगन खंडवाला भानु करणवाल, नीरज गुप्ता,राघव धवन,दीपक अग्रवाल,सुशांत बब्बर, दिलीप मल्होत्रा,डॉक्टर चैतन्य वशिष्ठ, अंकित कर्णवाल, जसवीर मोगा नितिन कर्णवाल, बंटी सिडाना, विकास कर्नवाल के अलावा अन्य लोग भी मौजूद रहे।

कुख्यात माफिया, हिस्ट्रीशीटर गैंग के लीडर रमाकांत यादव की अवैध संपत्ति कुर्क

भारत संवाद / नासिर हुसैन

आजमगढ़। कुख्यात माफिया, हिस्ट्रीशीटर और आईएस-133 गैंग के लीडर रमाकांत यादव के खिलाफ 48 साल में 58 मुकदमे दर्ज हैं।ये मुकदमे आजमगढ़, जौनपुर व लखनऊ जनपद के 10 थानों में दर्ज हैं।इनमें हत्या, हत्या का प्रयास, अपहरण, गैंगेस्टर, गुंडा एक्ट, एससी/एसटी एक्ट, सीएलए एक्ट, आर्म्स एक्ट और महामारी अधिनियम तक शामिल हैं।वह ढाई साल से जेल में बंद हैं। दीदारगंज थाना क्षेत्र के सरावां गांव में रमाकांत यादव का जन्म एक जुलाई 1957 में हुआ था।कुछ वर्ष बाद वह फूलपुर के अंबारी गांव में ही रहने लगे। राजनीति के साथ-साथ अपराध की दुनिया में भी अपनी पैठ बनाने लगे। रमाकांत यादव के खिलाफ पहला मुकदमा दीदारगंज थाने में वर्ष 1977 में दर्ज हुआ।इसके बाद दूसरा मुकदमा 1983 में दर्ज हुआ। धीरे-धीरे अपराध का ग्राफ बढ़ता गया और मुकदमों की लंबी फेहरिस्त हो गई। इसके साथ ही राजनीति में भी गहरी पैठ बनाई। रमाकांत यादव विधायक व सांसद चुने गए।वर्तमान में फूलपुर पवई का प्रतिनिधित्व करने वाले उत्तर प्रदेश विधान सभा के सदस्य और आजमगढ़ का प्रतिनिधित्व करने वाले पूर्व लोकसभा सदस्य हैं।इतना ही नहीं रमाकांत यादव ने अपने गैंग के साथ मिलकर अवैध शराब निर्माण, लूट, हत्या, और अपहरण जैसे जघन्य अपराधों से अर्जित धन से संपत्तियां खरीदी। प्रशासन ने रमाकांत यादव की हिस्ट्रीशीट खोली और आईएस-133 गैंग के लीडर के रूप में भी चिन्हित किया।फरवरी 2022 में आजमगढ़ जिले के अहरौला थाना क्षेत्र में जहरीली शराब पीने से सात लोगों की मौत हो गई थी

और कई अन्य गंभीर रूप से बीमार हुए थे। इस मामले में रमाकांत यादव को गिरफ्तार किया गया था और वह अब फतेहगढ़ जेल में हैं।माहुल शराब हत्या काण्ड व प्रदेश स्तर पर चिह्नित माफिया हिस्ट्रीशीटर 30-ए एवं कर-133 गैंग के लीडर रमाकांत यादव द्वारा अपराध जगत से अर्जित अवैध धन से क्रय की सम्पत्ति भूमि (कीमत लगभग 23,42,81,400 रुपये (तेईस करोड़ बयालिस लाख इक्यासी हजार चार सौ रुपये) को धारा 14(1) के तहत कुर्क किया गया।

कविता

अहमदाबाद विमान दुर्घटना ,12/06/25 (काल दिवस)

शोर नहीं था, बस खामोशी थी,
थी मजी ईश्वर की या प्रकृति की ?
सोचा न था कोई आएगी ऐसी विपत्ति,
पल भर में चली जाएगी जीवन संपत्ति।।

अंदर ही अंदर सब जल रहा था,
खामोशी और भय फैल रहा था।
क्या कसूर था उन डॉक्टरों का,
आनंद था भोजन का या मौत का शोर था।।

कितने अरमान थें, कितनी उम्मीदें थीं,
सिमट गई वो ख्वाहिशें जो भविष्य में जग की तकदीरें थी।
ख्वाबों का शहर पल भर में बिखर गया,
हर सांस के साथ एक जख्म उभर गया।।

आया एक ऐसा तूफान,
किया हर एक सांस को शांत।
है कहने को कुछ भी नहीं,
आँखें है नम और मन है परेशान।।

है परिवार के लिए दुःख की घड़ी,
अपनो की यादों की गठरी हो गई बड़ी।
रोशनी बन वो अब राह दिखाएंगे,
तारों सी चमक बन, रात में जगमगाएंगे।।

एक अंत ऐसा जो दिल को दहला गया,
दर्दनाक मौत का मंजर दिखा गया।
अंततः मैं देती हूं लेखनी को विराम,
ईश्वर दे मृत आत्मा को चिर आराम।।

लेखनी
शैलजा तिवारी
प्रतापगढ़, उ०प्र०

मारपीट व जान से मारने की धमकी देने पर तीन आरोपी गिरफ्तार

सहारनपुर।गत 26 सितम्बर 2024 को सुमित कुमार पुत्र रामपाल निवासी ग्राम सढोली ने थाना रामपुर मनिहारान को एक तहरीर दी गई थी जिसमे सुमित कुमार ने तीन लोगों पर जान से मारने की धमकी व मारपीट करने का आरोप लगाया था। इस सम्बंध में वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक द्वारा विवेचना स्थानान्तरित करते हुए थाना नानौता को दी

1257 अभ्यर्थी आरक्षी लखनऊ रवाना

15 जून को मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के हाथों मिलेंगे नियुक्ति पत्र

भारत संवाद

सहारनपुर। उत्तर प्रदेश में पिछले दिनों लगभग 60000 आरक्षी पदों की भर्ती हुई थी जिनके नियुक्ति पत्र 15 जून को लखनऊ में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ देंगे सहारनपुर के भी 1257 आरक्षी अपने नियुक्ति पत्र लेने के लिए सहारनपुर पुलिस लाइन से लखनऊ के लिए रवाना हुए चयनित आरक्षीयो ने बताया कि वह बहुत खुश हैं मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के द्वारा उनको नियुक्ति पत्र दिए जाएंगे और बिना भेदभाव के बिना किसी खर्चे के उनकी नियुक्तियां हुई हैं जिस कारण उन्होंने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की सरकार का भी धन्यवाद अदा किया है सभी के चेहरों पर खुशी साफ देखी जा रही थी सहारनपुर नोडल अधिकारी पुलिस अधीक्षक यातायात सिद्धार्थ वर्मा ने बताया कि सहारनपुर से 1257 चयनित आरक्षीयो को 29 बसों में लखनऊ के लिए रवाना किया गया है

जिला स्वच्छता समिति की बैठक सम्पन्न

स्वच्छता मिशन को प्रभावी, पारदर्शी एवं जनभागीदारीयुक्त बनाने पर हुआ गहन विचार-विमर्श

भारत संवाद

अलीगढ़ 13 जून 2025 (सू0वि0): जिलाधिकारी संजीव रंजन की अध्यक्षता में कलैक्ट्रेट सभागार में जिला स्वच्छता समिति एवं जिला स्वच्छ भारत मिशन मैनेजमेंट कमेटी की बैठक सम्पन्न हुई।बैठक में स्वच्छ भारत मिशन ग्रामीण को और अधिक प्रभावशाली, पारदर्शी एवं जनसहभागिता आधारित बनाने के लिए बहुपक्षीय बिंदुओं पर विस्तार से चर्चा की गई ।जिलाधिकारी ने निर्देश दिए कि ग्रामीण क्षेत्रों में स्वच्छता के निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति निर्धारित समय-सीमा में उच्च गुणवत्ता के साथ सुनिश्चित की जाए। उन्होंने कहा कि योजनाओं की सफलता तभी संभव है जब तकनीकी दक्षता के साथ-साथ जनसामान्य की भागीदारी भी सुनिश्चित हो ।बैठक में एनएनए स्पर्श प्रणाली को प्रभावी ढंग से लागू करने पर विशेष चर्चा हुई। डीपीआरओ मोहम्मद राशिद ने बताया कि अब पीएफएमएस के स्थान पर एनएनए स्पर्श प्रणाली के माध्यम से धनराशि का निर्गमन किया जाएगा, जिससे वित्तीय प्रक्रियाएं और अधिक सरल, त्वरित व पारदर्शी होंगी। ग्राम पंचायतों के एसएनए स्पर्श खातों में अनंतिम क्रेडिट लिमिट निर्धारित किए जाने पर भी चर्चा की गई, जिससे विकास कार्यों को गति मिलेगी। बैठक में बताया गया कि वित्तीय वर्ष 2025-26 के लिए 11,768 व्यक्तिगत शौचालय निर्माण का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। डीएम ने लक्ष्य के सापेक्ष विकास खण्डवार प्रति माह 800 से 1100 शौचालय निर्माण का लक्ष्य आवंटित किया है। डोर-टू-डोर कूड़ा संग्रहण की प्रभावी निगरानी के लिए सभी एडीओ को ष्स्वच्छता ऐपष के माध्यम से दैनिक प्रगति की रिपोर्टिंग सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए।

उत्तर मध्य रेलवे

निविदा सूचना संख्याः 42-विद्युत/सा0/प्रयागराज/25-26 दिनांकः 13.06.2025

ई-निविदा सूचना

भारत के राष्ट्रपति की ओर से वरिष्ठ मंडल विद्युत अभियंता (सामान्य) उत्तर मध्य रेलवे प्रयागराज निर्धारित प्रपत्र पर निम्नलिखित कार्यों हेतु ई-निविदा दिनांक **07.07.2025** समय **15:00** बजे तक आमंत्रित करते हैं निविदा सम्बंधित विस्तृत विवरण निम्नलिखित है-

क्रम संख्याः 01 **निविदा सूचना संख्याः** ELG-73-2526

कार्य का नामः डीडीयू-गाजियाबादः एनएसजी 3 और एनएसजी 4 श्रेणी के स्टेशनों पर चिलर प्लांट का प्रावधान और एएलडी डिवीजन में वाटर कूलर की क्षमता में वृद्धि।

काम की लागत (रु.में): 10703200.00 **बिड सिक्योरिटी (रु.में):** 203500.00

क्रम संख्याः 02 **निविदा सूचना संख्याः** ELG-74-2526

कार्य का नामः एसबीडीआर, सीयूके, एमजेडपी और एमकेपी में 4 पुराने स्टील टैंकों और सीएआर में 1 पुराने आरसीसी टैंक को एसबीडीआर और सीयूके में 25000 गैलन क्षमता के नए आरसीसी ओवरहेड टैंकों और एमकेपी, एमजेडपी और सीएआर में 50000 गैलन क्षमता के साथ-साथ सीनियर डेन/1/पीआरवाईजे अनुभाग में 7 ट्यूबवेल और संबंधित पाइप लाइनों आदि के साथ बदलने से संबंधित विद्युत कार्य।' 'आरआरएच-टीडीएल-ईटीडब्ल्यू, एसकेबी और पीएचडी में 50000 गैलन क्षमता के आरसीसी ओएच टैंक द्वारा पुराने स्टील ओएच टैंक को बदलने, जेजेके और ट्यूबवेल, पंप हाउस, पाइप लाइन पर 25000 गैलन के संबंध में विद्युत कार्य।

काम की लागत (रु.में): 8445213.72 **बिड सिक्योरिटी (रु.में):** 168900.00

क्रम संख्याः 03 **निविदा सूचना संख्याः** ELG-75-2526

कार्य का नामः एमकेपी स्टेशन पर 'मानिकपुरः 8 नग टाइप-1 स्टाफ क्वार्टरों को 6 नग टाइप III और 2 नग टाइप-IV क्वार्टरों से बदलने के संबंध में विद्युत कार्य। प्रयागराज मंडल के बीआरएन-ईटीएच सेक्शन में 02 गेट संख्या 19 सी (एसडब्ल्यूडब्ल्यू-जेएससी), 33सी (जेएससी-केडब्ल्यूडब्ल्यू) की इंटरलॉकिंग के संबंध में विद्युत कार्य। सूबेदारगंज में स्वचालित कोच वॉशिंग प्लांट के डिजाइन, आपूर्ति, स्थापना और कमीशनिंग के संबंध में विद्युत कार्य।

काम की लागत (रु.में): 3273830.23 **बिड सिक्योरिटी (रु.में):** 65500.00

कार्य समाप्त करने की समयावधिः 06 माह, **निविदा खुलने की तिथिः 07.07.2025**, समय-15:00 बजे। **नोटः 1.** उपरोक्त ई-टेंडर के साथ पूरी जानकारी (निविदा दस्तावेज़ के साथ) वेबसाइट **www.ireps.gov.in** पर 15:00 बजे निविदा खोलने की तिथि तक उपलब्ध है। **1032/25 (D)**

North central railways www.ncr.indianrailways.gov.in @ CPRONCR

विशेष रेलगाड़ी के अतिरिक्त फेरों का संचालन

भारतीय रेल द्वारा अपने सम्मानित रेल यात्रियों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए विशेष रेलगाड़ी के अतिरिक्त फेरों के संचालन का निर्णय लिया गया है, जिसका विवरण निम्नवत् हैं :-

04125/04126 सूबेदारगंज-बांद्रा (ट.) सुपरफास्ट विशेष रेलगाड़ी (साप्ताहिक)

गाड़ी सं. 04125 सूबेदारगंज-बांद्रा (ट.)		स्टेशन	गाड़ी सं. 04126 बांद्रा (ट.)-सूबेदारगंज	
आगमन	प्रस्थान	स्टेशन	आगमन	प्रस्थान
(सोम.)	05:20	सूबेदारगंज	17:00	---
06:35	06:37	फतेहपुर	13:58	14:00
08:00	08:05	गोविंदपुरी	12:50	12:55
09:48	09:50	इटावा	09:23	09:25
11:50	11:55	टुंडला	08:00	08:05
12:35	12:40	ईदगाह	06:55	07:00
13:18	13:20	फतेहपुर सीकरी	05:49	05:51
13:34	13:36	रूपबास	05:33	05:35
14:43	14:45	बयाना	05:03	05:05
15:43	15:45	गंगापुर सिटी	03:28	03:30
16:28	16:30	सवाई माधोपुर	02:38	02:40
17:40	17:45	कोटा	01:20	01:25
22:25	22:35	रतलाम	20:35	20:45
03:15	03:25	वडोदरा	16:11	16:21
05:28	05:33	उधना	14:30	14:33
06:23	06:25	वलसाड	13:43	13:45
06:56	06:58	वापी	13:21	13:23
08:39	08:42	बोरीवली	11:35	11:38
09:30	(मंगल)	बांद्रा टर्मिनस	(मंगल)	11:15

- **गाड़ी सं. 04125: सूबेदारगंज** से (प्रत्येक सोमवार) दिनांक 07.07.2025 से 29.09.2025 तक
- **गाड़ी सं. 04126: बांद्रा (ट.)** से (प्रत्येक मंगलवार) दिनांक 08.07.2025 से 30.09.2025 तक

नोटः ट्रेनों की समय-सारणी के सम्बन्धित जानकारी हेतु हेल्पलाइन 139 या Rail madad Mobile App या वेबसाइट railmadad.indianrailways.gov.in का प्रयोग करें।

उत्तर मध्य रेलवे

@ CPRONCR North central railways www.ncr.indianrailways.gov.in 1040/25(D)

भारत संवाद परिवार

1-संरक्षक-भारत संवाद डॉ राम किशोर शर्मा पूर्व विभागाध्यक्ष इलाहाबाद विश्व विद्यालय कबीर सम्मान 2021 से सम्मानित, 2-संरक्षक-भारत संवाद, आचार्य पं0 पृथ्वीनाथ पाण्डेय भाषाविज्ञानी एंव मीडियाध्ययन विशेषज्ञ, 3-संरक्षक-भारत संवाद गजानन महतपुरकर, (सुपरिचित कवि, लेखक, गीतकार, मंच संचालक, स्वतंत्र पत्रकार एवं सदस्य, महाराष्ट्र राज्य हिंदी साहित्य अकादमी तथा पश्चिम रेलवे, चर्चगेट के वरिष्ठ जनसम्पर्क अधिकारी पद से सेवानिवृत्त), 4-कला एवं मनोरंजन संपादक (भारत संवाद), जगन्नाथ तिवारी, 5-उपसंपादक (भारत संवाद), माता प्रसाद शर्मा, 6-प्रभारी प्रयागराज संस्करण आशीष कुमार शर्मा

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक अरविन्द कुमार शर्मा द्वारा रमा प्रिंटिंग प्रेस 53/25/1-ए बेली रोड नया कटरा इलाहाबाद से मुद्रित एंव ज्ञान गंगा कालोनी सराय तकी झूंसी प्रयागराज से प्रकाशित।
संपादक- अरविन्द कुमार शर्मा ।फोन नं०.05324012522 मो०-9455137214,9935750291,E mail-bharatsamvad2009@gmail.com RNI No-UPHIN/2009/30939
(किसी भी विवाद का न्याय क्षेत्र इलाहाबाद उच्च न्यायालय होगा)।

फरवरी महीने से जायद की फसलों की बुवाई का समय शुरू है। इन फसलों की बुवाई मार्च तक चलती है। इस समय बोने पर ये फसलें अच्छी पैदावार देती हैं। इस मौसम में खीरा, ककड़ी, करेला, लौकी, तोरई, पेठा, पालक, फूलगोभी, बैंगन, भिण्डी, अरबी जैसी सब्ज़ियों की बुवाई करनी चाहिए।

गर्मियों में उगाए सब्जियां होगा भरपूर फायदा

खीरा

खीरे की खेती के लिए खेत में क्यारियां बनाएं। इसकी बुवाई लाइन में ही करें। लाइन से लाइन की दूरी 1.5 मीटर रखें और पौधे से पौधे की दूरी 1 मीटर। बुवाई के बाद 20 से 25 दिन बाद निराई - गुड़ाई करना चाहिए। खेत में सफाई रखें और तापमान बढ़ने पर हर सप्ताह हल्की सिंचाई करें। खेत से खरपतवार हटाते रहें।

ककड़ी

ककड़ी की बुवाई के लिए एक उपयुक्त समय फरवरी से मार्च ही होता है लेकिन अगेती फसल लेने के लिए पॉलीथीन की थैलियों में बीज भरकर उसकी रोपाई जनवरी में भी की जा सकती है। इसके लिए एक एकड़ भूमि में एक किलोग्राम बीज की ज़रूरत होती है। इसे लगभग हर तरह की ज़मीन में उगाया जा सकता है। भूमि की तैयारी के समय गोबर की खाद डालें व खेत की तीन से चार बार जुताई करके सुहागा लगाएं। ककड़ी की बीजाई 2 मीटर चौड़ी क्यारियों में नाली के किनारों पर करनी चाहिए। पौधे से पौधे का अंतर 60 सेंटीमीटर रखें। एक जगह पर दो - तीन बीज बोएं। बाद में एक स्थान पर एक ही पौधा रखें।

करेला

हल्की दोमट मिट्टी करेले की खेती के लिए अच्छी होती है। करेले की बुवाई दो तरीके से की जाती है - बीज से और पौधे से। करेले की खेती के लिए 2 से 3 बीज 2.5 से 5 मीटर की दूरी पर बोने चाहिए। बीज को बोने से पहले 24 घंटे तक पानी में भिगो लेना चाहिए इससे अंकुरण जल्दी और अच्छा होता है। नदियों के किनारे की ज़मीन करेले की खेती के लिए बढ़िया रहती है। कुछ अम्लीय भूमि में इसकी खेती की जा सकती है। पहली जुताई मिट्टी पलटने वाले हल से करें इसके बाद दो - तीन बार हैरो या कल्टीवेटर चलाएं।

लौकी

लौकी की खेती कर तरह की मिट्टी में हो जाती है लेकिन दोमट मिट्टी इसके लिए सबसे अच्छी होती है। लौकी की खेती के लिए एक हेक्टेयर में 4.5 किलोग्राम बीज की ज़रूरत होती है। बीज को खेत में बोने से पहले 24 घंटे पानी में भिगोने के बाद टाट में बांध कर 24 घंटे रखें। करेले की तरह लौकी में भी ऐसा करने से बीजों का अंकुरण जल्दी होता है। लौकी के बीजों के लिए 2.5 से 3.5 मीटर की दूरी पर 50 सेंटीमीटर चौड़ी व 20 से 25 सेंटीमीटर गहरी नालियां बनानी चाहिए। इन नालियों के दोनों किनारे पर गरमी में 60 से 75 सेंटीमीटर के फासले पर बीजों की बुवाई करनी चाहिए। एक जगह पर 2 से 3 बीज 4 सेंटीमीटर की गहराई पर बोएं।

भिंडी

भिंडी की अगेती किस्म की बुवाई फरवरी से मार्च के बीच करते हैं। इसकी खेती हर तरह की मिट्टी में हो जाती है। भिंडी की खेती के लिए खेत को दो-तीन बार जुताई कर मिट्टी को भुरभुरा कर लेना चाहिए और फिर पाटा चलाकर समतल कर लेना चाहिए। बुवाई कतारों में करनी चाहिए। कतार से कतार दूरी 25-30 सेमी और कतार में पौधे की बीच की दूरी 15-20 सेमी रखनी चाहिए। बोने के 15-20 दिन बाद पहली निराई-गुड़ाई करना जरुरी रहता है। खरपतवार नियंत्रण के लिए रासायनिक का भी प्रयोग किया जा सकता है।

तोरई

हल्की दोमट मिट्टी तोरई की सफल खेती के लिए सबसे अच्छी मानी जाती है। नदियों के किनारे वाली भूमि इसकी खेती के लिए अच्छी रहती है। इसकी बुवाई से पहले, पहली जुताई मिट्टी पलटने वाले हल से करें इसके बाद 2 से 3 बार बार हैरो या कल्टीवेटर चलाएं। खेत कि तैयारी में मिट्टी भुरभुरी हो जानी चाहिए। तोरई में निराई ज़्यादा करनी पड़ती है। इसके लिए कतार से कतार की दूरी 1 से 1.20 मीटर और पौधे से पौधे की दूरी एक मीटर होनी चाहिए। एक जगह पर 2 बीज बोने चाहिए। बीज को ज़्यादा गहराई में न लगाएं इससे अंकुरण पर फर्क पड़ता है। एक हेक्टेयर ज़मीन में 4 से 5 किलोग्राम बीज लगता है।

अरबी

अरबी की खेती के लिए रेतीली दोमट मिट्टी अच्छी रहती है। इसके लिए ज़मीन गहरी होनी चाहिए। जिससे इसके कंदों का समुचित विकास हो सके। अरबी की खेती के लिए समतल क्यारियां बनाएं। इसके लिए कतार से कतार की दूरी 45 सेमी. व पौधे से पौधे की दूरी 30 सेमी होनी चाहिए। इसकी गांठों को 6 से 7 सेंटीमीटर की गहराई पर बो दें।

पालक

पालक के लिए बलुई दोमट या मटियार मिट्टी अच्छी होती है लेकिन ध्यान रहे अम्लीय ज़मीन में पालक की खेती नहीं होती है। भूमि की तैयारी के लिए मिट्टी को पलेवा करके जब वह जुताई योग्य हो जाए तब मिट्टी पलटने वाले हल से एक जुताई करना चाहिए, इसके बाद 2 या 3 बार हैरो या कल्टीवेटर चलाकर मिट्टी को भुरभुरा बना लेना चाहिए। साथ ही पाटा चलाकर भूमि को समतल करें। पालक की खेती के लिए एक हेक्टेयर में 25 से 30 किलोग्राम बीज की ज़रूरत होती है। बुवाई के लिए कतार से कतार की दूरी 20 से 25 सेंटीमीटर और पौधे से पौधे की दूरी 20 सेंटीमीटर रखना चाहिए। पालक के बीज को 2 से 3 सेन्टीमीटर की गहराई पर बोना चाहिए, इससे अधिक गहरी बुवाई नहीं करनी चाहिए।

बैंगन

इसकी नर्सरी फरवरी में तैयार की जाती है और बुवाई अप्रैल में की जाती है। बैंगन की खेती के लिए अच्छी जल निकासी वाली दोमट मिट्टी उपयुक्त होती है। नर्सरी में पौधे तैयार होने के बाद दूसरा महत्वपूर्ण कार्य होता है खेत को तैयार करना। मिट्टी परीक्षण करने के बाद खेत में एक हेक्टेयर के लिए 4 से 5 ट्रॉली पक्का हुआ गोबर का खाद् बिखेर दे। बैंगन की खेती के लिए दो पौधों और दो कतार के बीच की दूरी 60 सेंटीमीटर होनी ही चाहिए।

पेठा

पेठा कद्दू की खेती के लिए दोमट व बलुई दोमट मिट्टी सब से अच्छी मानी जाती है। इसके अलावा यह कम अम्लीय मिट्टी में आसानी से उगाया जा सकता है। पेठा की बुवाई से पहले खेतों की अच्छी तरह से जुताई कर के मिट्टी को भुरभुरी बना लेना चाहिए और 2-3 बार कल्टीवेटर से जुताई कर के पाटा लगाना चाहिए। इसके लिए एक हेक्टेयर में 7 से 8 किग्रा बीज की ज़रूरत होती है। इसकी बुवाई के लिए लगभग 15 हाथ लंबा का एक सीधा लकड़ी का डंडा ले लेते हैं, इस डंडे में दो-दो हाथ की दूरी पर फीता बांधकर निशान बना लेते हैं जिससे लाइन टेढ़ी न बने। दो हाथ की दूरी पर लम्बाई और चौड़ाई के अंतर पर गोबर की खाद का सीधे लाइन में गोबर की खाद घुरवा बनाते हैं जिसमे पेठे के सात से आठ बीजे गाड़ देते हैं अगर सभी जम गए तो बाद में तीन चार पौधे छोड़कर सब उखाड़ कर फेंक दिए जाते हैं।

लॉस एंजिलिस-हिंसा के बीच वाशिंगटन में मिलिट्री परेड की तैयारी

2 हजार जगहों पर विरोध प्रदर्शन; ट्रम्प का 79वां जन्मदिन

एजेंसी

वॉशिंगटन डीसी, अमेरिका के लॉस एंजिलिस में बीते 8 दिनों से जारी विरोध प्रदर्शन के बीच, वाशिंगटन में शनिवार को अमेरिकी सेना की 250वीं वर्षगांठ के साथ-साथ राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप का 79वां जन्मदिन मनाया जाएगा। आज राजधानी में भव्य मिलिट्री परेड का आयोजन होगा। परेड शाम 6:30 बजे (भारतीय समयानुसार रविवार तड़के 4 बजे) शुरू होगी और 90 मिनट तक चलेगी। यहां, 2 लाख से ज्यादा लोगों के पहुंचने की उम्मीद है। इस बीच, मिलिट्री परेड के विरोध में पूरे अमेरिका में लगभग 2 हजार जगहों पर नो किंग्स (यानी अमेरिका का कोई राजा नहीं है) विरोध प्रदर्शन हो रहे हैं। इस बीच, पूरे अमेरिका में नो किंग्स नामक विरोध प्रदर्शन हो रहे हैं। यह आंदोलन ट्रम्प की नीतियों और तानाशाही रवैये का विरोध करता है। इस आंदोलन का नाम ₹50 स्टेट्स, 50 प्रोटेस्टर्स, वन मूवमेंट₹ से प्रेरित

है, जिसका मतलब है कि अमेरिका के 50 राज्यों में एक साथ विरोध प्रदर्शन। इस प्रदर्शन में करीब 2,000 शहरों और कस्बों में शांतिपूर्ण प्रदर्शन होंगे, जिनमें लोग झंडे लहराएंगे, भाषण देंगे और नारे लगाए जाएंगे। फिलाडेल्फिया में सबसे बड़ा प्रदर्शन होगा। हालांकि वाशिंगटन में कोई बड़ा विरोध नहीं होगा। शिकागो, न्यूयॉर्क, और एंकोरेज जैसे शहरों में भारी भीड़ जुटने की उम्मीद है। एक प्रदर्शन के दौरान न्यूयॉर्क में पुलिस ने प्रदर्शनकारियों पर काली मिर्च का स्प्रे इस्तेमाल किया, जबकि स्पोकेन में 30 से अधिक लोग गिरफ्तार हुए। वाशिंगटन में 34 साल बाद इतने बड़े पैमाने पर मिलिट्री परेड का आयोजन हो रहा है। इससे पहले 1991 में ऐसा आयोजन हुआ था। इस परेड के कारण वाशिंगटन की सड़कें 4 दिन तक बंद रहेंगी। इस परेड में टैंक, 6,700 सैनिक, 128 वाहन, 62 विमान शामिल होंगे। राष्ट्रपति ट्रम्प ने इस परेड को अमेरिकी ताकत और सैनिकों के बलिदान का प्रतीक बताया है। इस आयोजन में करीब 25 से 45 मिलियन डॉलर (21-38 करोड़) खर्च हुए हैं। जिससे शहर में ट्रैफिक जाम जैसे हालात बने हुए हैं। इसके साथ रोनाल्ड रीगन हवाई अड्डे पर कुछ समय के लिए उड़ानें रोक दी गई हैं। राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने चेतावनी दी है कि अगर लॉस एंजिलिस में हिंसा जारी रही तो वे पूरे शहर में विद्रोह कानून लागू कर सकते हैं। यह कानून सरकार को हिंसा रोकने के लिए सैन्य बल का इस्तेमाल करने की इजाजत देता है। वहीं, अमेरिकी राष्ट्रपति ने 14 जून को वॉशिंगटन डीसी में होने वाली आर्मी परेड के दौरान प्रदर्शन को लेकर भी चेतावनी दी है। उन्होंने कहा कि अगर कोई प्रदर्शन करता है तो उसे सेना का सामना करना पड़ेगा।

हमला नहीं रोका तो जलाकर खाक कर देंगे

ईरान को इजरायल की चेतावनी

एजेंसी

इजरायल के रक्षा मंत्री इजरायल कैट्ज ने शनिवार को ईरान को कड़ी चेतावनी देते हुए कहा कि अगर इजरायल पर मिसाइल हमले जारी रहे तो तेहरान जल जाएगा। कैट्ज की यह टिप्पणी ईरान के परमाणु कार्यक्रम को निशाना बनाकर किए गए इजरायली हमलों के जवाब में ईरान द्वारा रात भर किए गए मिसाइल हमले के बाद आई है।

सुरक्षा आकलन के दौरान आईडीएफ चीफ ऑफ स्टाफ लेफ्टिनेंट जनरल इयाल जमीर और मोसाद निदेशक डेविड बार्निया के साथ बोलते हुए, कैट्ज ने सीधे ईरान के सर्वोच्च नेता अयातुल्ला अली खामेनेई को संबोधित किया।

कैट्ज ने कहा कि ईरानी तानाशाह ईरान के नागरिकों को बंधक बना रहा है, और विशेष रूप से तेहरान के निवासियों को इजरायली नागरिकों पर आपराधिक हमले की भारी कीमत चुकानी पड़ेगी। इजरायली सेना ने शनिवार को पुष्टि की कि उसके ऑपरेशन, जिसका कोडनेम राइजिंग लॉयन था, ने नौ वरिष्ठ ईरानी परमाणु वैज्ञानिकों को सफलतापूर्वक मार गिराया है।

आईडीएफ के अनुसार, वैज्ञानिक सीधे तौर पर ईरान की परमाणु हथियार क्षमताओं को बढ़ाने में शामिल थे। सेना ने कहा किये हमले सटीक खुफिया

जानकारी के आधार पर किए गए थे। उनका खात्मा ईरानी शासन की सामूहिक विनाश के हथियार हासिल करने की क्षमता के लिए एक बड़ा झटका है। ड्रोन और युद्धक विमानों से किए गए हवाई हमलों ने कथित तौर पर नतांज और इस्फहान सहित संवेदनशील परमाणु सुविधाओं को निशाना बनाया, जिससे व्यापक क्षति हुई। जवाबी कार्रवाई में ईरान ने शुक्रवार रात को इजरायली क्षेत्र में दर्जनों बैलिस्टिक मिसाइलें दागीं। विस्फोटों ने यरुशलम और तेल अवीव के आसमान को जगमगा दिया, जबकि इजरायल की आयरन डोम रक्षा प्रणाली और अमेरिका द्वारा आपूर्ति किए गए इंटरसेप्टर आने वाले खतरों को बेअसर करने के लिए काम कर रहे थे। मध्य इजरायल में नागरिकों से आश्रय लेने का आग्रह किया गया। इजरायली अधिकारियों ने कम से कम तीन मौतों और दर्जनों लोगों के घायल होने की पुष्टि की। इस बीच, ईरान के संयुक्त राष्ट्र राजदूत ने बताया कि इजरायल के हमलों में 78 ईरानी मारे गए और 320 से अधिक घायल हुए।

एससीओ की इजरायल पर निंदा वाले स्टैंड से अलग हुआ भारत

मध्य पूर्व में बढ़ते तनाव को लेकर हुई थी बैठक

एससीओ का यह बयान 13 जून को ईरान पर इजरायल के हमलों के बाद पश्चिम एशिया में बढ़ते तनाव के बीच आया है। इजरायल ने शुक्रवार को ईरान के परमाणु कार्यक्रम को निशाना बनाते हुए ईरान पर पूर्व-निवारक अभियान शुरू किया।

एजेंसी

शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) ने मध्य पूर्व में बढ़ते तनाव पर गंभीर चिंता व्यक्त की है और 13 जून को ईरान पर इजरायल द्वारा किए गए सैन्य हमलों की कड़ी निंदा की है। हालांकि, भारत ने ईरान पर इजरायल के सैन्य हमलों की निंदा करने वाले बयान पर शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) की चचाओं में भाग लेने से परहेज किया और तनाव कम करने के लिए बातचीत और कूटनीति का आग्रह किया। विदेश मंत्रालय ने कहा, इस मामले पर भारत की अपनी स्थिति 13 जून 2025 को हमारे द्वारा स्पष्ट की गई थी और यह वही है। हम आग्रह करते हैं कि तनाव कम करने की दिशा में काम करने के लिए बातचीत और कूटनीति के चैनलों का उपयोग किया जाना चाहिए और यह आवश्यक है कि अंतर्राष्ट्रीय समुदाय उस दिशा में प्रयास करे। एससीओ का यह बयान 13 जून को ईरान पर इजरायल के हमलों के बाद पश्चिम एशिया में बढ़ते तनाव के बीच आया है। इजरायल ने शुक्रवार को ईरान के परमाणु कार्यक्रम को निशाना बनाते हुए ईरान पर पूर्व-निवारक अभियान शुरू किया। एससीओ सदस्य देशों द्वारा जारी बयान में कहा गया है, शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) के सदस्य देश मध्य पूर्व में बढ़ते तनाव पर गंभीर चिंता व्यक्त करते हैं और 13 जून, 2025 को इस्लामिक रिपब्लिक ऑफ ईरान के क्षेत्र पर इजरायल द्वारा किए गए सैन्य हमलों की कड़ी निंदा करते हैं। ऊर्जा और परिवहन अवसंरचना सहित नागरिक लक्ष्यों के खिलाफ इस तरह की आक्रामक कार्रवाइयां, जिसके परिणामस्वरूप नागरिक हताहत हुए हैं, अंतर्राष्ट्रीय कानून और संयुक्त राष्ट्र चार्टर का घोर उल्लंघन है। वे ईरान की संप्रभुता का उल्लंघन करते हैं, क्षेत्रीय और अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा को नुकसान पहुंचाते हैं, और वैश्विक शांति और स्थिरता के लिए गंभीर जोखिम पैदा करते हैं।

एससीओ सदस्यों ने ईरान के लोगों और सरकार के प्रति संवेदना व्यक्त की और शांतिपूर्ण, राजनीतिक और कूटनीतिक तरीकों से ईरान के परमाणु कार्यक्रम से संबंधित स्थिति के समाधान का आान किया। बयान में कहा गया, एससीओ सदस्य देश ईरान के परमाणु कार्यक्रम से संबंधित स्थिति के शांतिपूर्ण, राजनीतिक और कूटनीतिक तरीकों से समाधान की दृढ़ता से वकालत करते हैं। एससीओ सदस्य देश इस्लामी गणराज्य ईरान के लोगों और सरकार के प्रति अपनी हार्दिक संवेदना व्यक्त करते हैं।

इजराइल का साथ दिया तो कोई नरमी नहीं बरतेंगे

दुनिया को धमकाने वाले ट्रंप को खामनेई की सीधी चेतावनी

एजेंसी

ईरान ने अमेरिका समेत अन्य देशों को कड़ी चेतावनी दी है। ईरान का कहना है कि जो भी देश इजरायल के साथ खड़ा है वो हमारे टारगेट पर है। हम इजरायल पर नरमी नहीं बरतेंगे। इजरायल को माकूल जवाब दिया जाएगा। जो भी देश इजरायल के समर्थन में खड़े हैं वो भी हमारे टारगेट पर हैं। ईरान की ये चेतावनी सीधे तौर पर अमेरिका को है। ईरान की ओर से सैकड़ों मिसाइलें तेल अवीव पर दागी गई। ईरान के धार्मिक नेता खामनेई

ने कहा कि इजरायल को पछताना पड़ेगा। इसके बाद फिर इजरायल ने ईरान पर हमला किया। देर रात तेहरान में धमाकों की आवाज भी सुनाई पड़ी। पलटवार करते हुए ईरान ने इजरायल पर 150 बैलेस्टिक मिसाइलों से हमला किया है। इनमें से छह मिसाइलें राजधानी तेल अवीव में गिरी जिसमें एक महिला की मौत हो गई। वहीं 63 अन्य घायल हो चुके हैं। गौरतलब है कि ईरान में परमाणु स्थलों को निशाना बनाकर किए गए इजरायली हमलों के बाद तनाव बढ़ गया है। जानकारी के मुताबिक इस हमले में ईरान के 78 लोगों की मौत हुई है। जबकि 320 से ज्यादा लोग घायल बताए जा रहे हैं। वहीं ईरान के जवाबी हमले पर इजरायली प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने साफ कहा है कि उनकी ओर से हमला जारी रहेगा और ईरानी परमाणु स्थल को निशाना बनाया जाएगा। ईरान ने अमेरिका के साथ न्यूक्लियर डील से हटने की घोषणा की है। उधर, राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने ईरान से कहा है कि वह अपने न्यूक्लियर प्रोगाम पर अमेरिका के साथ समझौता करे। उन्होंने कहा कि ईरान को समझौता करने के लिए कई मौके दिए, लेकिन वे ऐसा नहीं कर पाए। आगाह किया कि इजरायल के हमले और भी तेज होते जाएंगे। हमलों के बाद ट्रंप ने कहा कि अब भी समय है कि नरसंहार को रोका जाए। खामेनेई ने एक बयान में कहा कि इजराइल ने हमारे प्यारे देश में अपराध के लिए अपना दुष्ट और खून से सना हाथ फैलाया है, तथा आवासीय केंद्रों पर हमला करके अपनी दुर्भावनापूर्ण प्रकृति को पहले से कहीं अधिक उजागर कर दिया है।

इजरायली सेना ने नक्शे में कश्मीर को पाकिस्तान और अरुणाचल को चीन दिखाया, 90 मिनट में भारत से मांगी माफी

एजेंसी

विवादास्पद मानचित्र ईरान को वैश्विक खतरे के रूप में पेश करने वाले संदेश के हिस्से के रूप में पोस्ट किया गया था। यह पश्चिम एशिया में बढ़ते तनाव के बीच आया है, खासकर 7 अक्टूबर को हमास के हमलों के बाद गाजा में इजरायल के चल रहे सैन्य अभियानों के बाद।

इजराइली रक्षा बलों द्वारा ईरान की मिसाइलों की सीमा को दर्शाने वाला मानचित्र जारी करने के एक दिन बाद, जिसमें जम्मू-कश्मीर को पाकिस्तान और पूर्वोत्तर भारत को नेपाल का हिस्सा गलत तरीके से दर्शाया गया था, सेना ने शनिवार को माफी जारी की, जिसमें स्पष्ट किया गया कि मानचित्र का उद्देश्य सटीक राष्ट्रीय सीमाओं का प्रतिनिधित्व करना नहीं था। यह माफी इजरायल और ईरान के बीच बढ़ते सैन्य संघर्ष के बीच जारी गलत मानचित्र पर भारत में भारी आक्रोश के बाद आई है।एक भारतीय अकाउंट द्वारा पोस्ट किए गए पोस्ट का जवाब देते हुए, आईडीएफ ने स्वीकार किया कि मानचित्र ₹सीमाओं को सटीक रूप से चित्रित करने में विफल रहा है₹ और स्पष्ट किया कि यह केवल क्षेत्रीय चित्रण के लिए था, आधिकारिक प्रतिनिधित्व नहीं। प्रारंभिक पोस्ट के लगभग 90 मिनट बाद माफी आई। एक पोस्ट में कहा यह पोस्ट क्षेत्र का चित्रण है। यह मानचित्र सीमाओं को सटीक रूप से चित्रित करने में विफल रहता है। इस छवि के कारण हुई किसी भी ठेस के लिए हम क्षमा चाहते हैं। इजरायली सेना भारतीय दक्षिणपंथी समुदायह्व द्वारा पोस्ट किए गए एक पोस्ट का जवाब दे रही थी, जिसमें लिखा था: अब आप समझ गए होंगे कि भारत तटस्थ क्यों रहता है। कूटनीति में, कोई भी वास्तव में आपका मित्र नहीं है।भारत सरकार ने अभी तक आधिकारिक रूप से कोई जवाब नहीं दिया है। हालाँकि, भारत ने लगातार कहा है कि जम्मू-कश्मीर और लद्दाख, जिसमें पाकिस्तान और चीन द्वारा अवैध रूप से कब्जा किए गए क्षेत्र शामिल हैं, देश के अभिन्न अंग हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने हाल ही में पहलगाम आतंकी हमले और ऑपरेशन सिंदूर के दौरान इस स्थिति को दोहराया।भारत-इजरायल के मजबूत संबंध संवेदनशीलता को रेखांकित करते हैंभारत और इजरायल के बीच मजबूत और बढ़ते संबंधों को देखते हुए यह घटना आश्चर्यजनक है। पीएम मोदी 2017 में इजरायल का दौरा करने वाले पहले भारतीय प्रधानमंत्री बने, जो द्विपक्षीय संबंधों में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर साबित हुआ।

'गाजा हो रहा तबाह, हम मना रहे खुशी'

यूएनजीए के प्रस्ताव पर भारत ने नहीं किया वोट तो बोली कांग्रेस

कांग्रेस ने गाजा में शांति स्थापित करने और इजरायल की ओर से किए जा रहे हमले को पूर्ण रूप से रोकने के लिए मतदान से किनारे रहने पर भारत की आलोचना की है .

एजेंसी

यहूदी देश इजरायल और गाजा के बीच लंबे समय से संघर्ष जारी है. इजरायल लगातार गाजा पट्टी पर हमले कर रहा है. वहीं, इन दोनों देशों के बीच शांति स्थापित करने के लिए दुनिया के कई देशों के साथ संयुक्त राष्ट्र भी कोशिशों में जुटा है. संयुक्त राष्ट्र की महासभा (यूएनजीए) ने गाजा और इजरायल के बीच स्थापित करने के लिए एक प्रस्ताव भी तैयार किया है.

यूएनजीए के इस प्रस्ताव पर दुनिया के 149 देशों ने समर्थन में वोट किया है, जबकि भारत उन 19 देशों में एक है, जिसने प्रस्ताव के लिए वोटिंग से दूरी बनाई. हालांकि, गाजा को लेकर भारत सरकार के इस रुख के लिए भारत की मूल विपक्षी पार्टी कांग्रेस ने सरकार की आलोचना की है. कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे, सांसद प्रियंका गांधी वाड्रा, पवन खेड़ा, केसी वेणुगोपाल ने केंद्र सरकार के इस फैसले पर आपत्ति जताई और इस कदम को देश की नैतिक कूटनीति और शांति और न्याय के समर्थन करने की नीति के लिए खतरा करार दिया.

खराब हो चुकी है भारत की विदेश नीति- मल्लिकार्जुन खरगे

कांग्रेस पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने रविवार (14 जून) को एक ट्वीट में कहा कि भारत की विदेश नीति अब खराब हो चुकी है. उन्होंने कहा, प्रधानमंत्री मोदी अपने विदेश मंत्री की बार-बार की गई गलतियों पर ध्यान दें और इसकी जिम्मेदारी लें.उन्होंने कहा, गाजा में सीजफायर स्थापित करने के लिए यूएनजीए के प्रस्ताव पर दुनिया के 149 देशों ने वोट किया है, लेकिन इस प्रस्ताव पर वोट न देकर भारत अब अलग-थलग पड़ गया है. क्योंकि भारत उन 19 देशों में शामिल है, जिन्होंने वोटिंग से खुद को दूर रखा है.

नेतन्याहू गाजा को तबाह कर रहे और हम खुशी मना रहे हैं- प्रियंका गांधी वाड्रा

वहीं, कांग्रेस सांसद प्रियंका गांधी वाड्रा ने भारत सरकार के इस फैसले को शर्मनाक और निराशाजनक कहा है. उन्होंने कहा कि सरकार का यह कदम एंटी-कोलोनियल लेगेसी के विपरीत है.

कन्नौज के पूर्व सांसद छोटे सिंह यादव का निधन, अखिलेश यादव ने दी श्रद्धांजलि

सपा प्रमुख यादव ने एक्स पर एक पोस्ट में कहा, सहकारिता आंदोलन के पुरोधा, समाजवादी पार्टी के संस्थापक सदस्य और कन्नौज से कई बार सांसद एवं छिबरामऊ से विधायक रहे श्री छोटे सिंह यादव जी का निधन, अत्यंत दुःखद है।

एजेंसी

समाजवादी पार्टी (सपा) के संस्थापक सदस्य एवं कन्नौज लोकसभा सीट से तीन बार के सांसद रहे छोटे सिंह यादव का लंबी बीमारी के बाद लखनऊ के एक अस्पताल में निधन हो गया। पारिवारिक सूत्रों ने यह जानकारी दी।छोटे सिंह यादव के निधन पर समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने अपनी शोक संवेदना व्यक्त करते हुए श्रद्धांजलि अर्पित की है।पूर्व सांसद छोटे सिंह यादव ने कन्नौज लोकसभा सीट पर वर्ष 1980, 1989 और 1991 में जीत दर्ज की थी। कुछ दिनों पहले ही कन्नौज से सपा सांसद अखिलेश यादव ने अस्पताल पहुंचकर छोटे सिंह यादव से मुलाकात की और उनके उपचार की जानकारी ली थी।सपा प्रमुख यादव ने शुक्रवार को एक्स पर एक पोस्ट में कहा, सहकारिता आंदोलन के पुरोधा, समाजवादी पार्टी के संस्थापक सदस्य और कन्नौज से कई बार सांसद एवं छिबरामऊ से विधायक रहे श्री छोटे सिंह यादव जी का निधन, अत्यंत दुःखद है। ईश्वर उनकी आत्मा को शांति दें। यादव ने कहा, शोक संतप्त परिजनों के प्रति गहरी संवेदनाएं।

ग्राहकों से वादा कर टाइम पर फ्लैट की पजेशन न देना पड़ेगा बहुत महंगा

सुप्रीम कोर्ट ने बिल्डर्स को दिया आदेश

सुप्रीम कोर्ट ने साफ किया कि डेवलपर्स खरीदारों द्वारा अपने घरों के वित्तपोषण के लिए लिए गए व्यक्तिगत ऋण पर ब्याज का भुगतान करने के लिए उत्तरदायी नहीं ठहराया जा सकता। फैसले में, न्यायालय ने स्पष्ट किया कि डेवलपर्स को घर खरीदारों को देरी या डिलीवरी न होने की स्थिति में ब्याज सहित मूल राशि वापस करनी होगी।

एजेंसी

वो बिल्डर्स जो ग्राहकों से वादा करने के बाद भी वक्त पर फ्लैट की डिलीवरी नहीं देते हैं। उन्हें अब ये बहुत महंगा पड़ने वाला है। ग्रेटर मोहाली एरिया डेवलपमेंट अथॉरिटी (जीएमएडीए) बनाम अनुपम गर्ग एवं अन्य के मामले में हाल ही में दिए गए फैसले में सुप्रीम कोर्ट ने स्पष्ट किया कि देरी या डिलीवरी न होने की स्थिति में डेवलपर्स को पीड़ित घर खरीदारों को ब्याज सहित मूल राशि वापस करनी होगी। इसके साथ ही सुप्रीम कोर्ट ने साफ किया कि डेवलपर्स खरीदारों द्वारा अपने घरों के वित्तपोषण के लिए लिए गए व्यक्तिगत ऋण पर ब्याज का भुगतान करने के लिए उत्तरदायी नहीं ठहराया जा सकता। फैसले में, न्यायालय ने स्पष्ट किया कि डेवलपर्स को घर खरीदारों को देरी या डिलीवरी न होने की स्थिति में ब्याज सहित मूल राशि वापस करनी होगी।

उपभोक्ता अदालत ने क्या फैसला दिया था

जस्टिस संजय करोल और प्रसन्ना बी वराले की पीठ ने पिछले सप्ताह मोहाली के सेक्टर 88 में जीएमएडीए के ह्यपूरब प्रीमियम अपार्टमेंट प्रोजेक्ट से उपजे विवाद में यह फैसला सुनाया। खरीदार अनुपम गर्ग और राजीव कुमार ने 2012 में 2-बीएचके फ्लैट बुक किए थे और क्रमशः ?50.46 लाख और ?41.29 लाख जमा किए थे। उन्हें लेटर ऑफ इंटेंट (एलओआई) के तहत मई 2015 तक कब्जा देने का वादा किया गया था, जिसमें देरी होने पर 8% ब्याज के साथ रिफंड का आश्वासन भी दिया गया था। धीमी प्रगति और वादा किए गए लेआउट और सुविधाओं से बड़े विचलन का हवाला देते हुए, खरीदारों ने 2016 में रिफंड की मांग की। जब ऋटअऊअ ने इसका विरोध किया, तो उन्होंने पंजाब राज्य उपभोक्ता आयोग का रुख किया।